



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

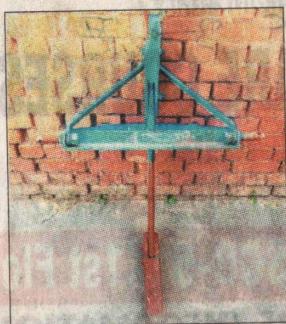
समाचार पत्र का नाम.....उत्तर उत्तरा  
दिनांक २०.१०.२०२० पृष्ठ संख्या.....२ कॉलम.....३७

# हकूमि के वैज्ञानिकों ने किया दावा - सब साइलर बढ़ाएगा गन्ने की पैदावार

अमर उत्ताला व्हूरो

हिसार। गन्ने की पैदावार बढ़ाने के लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकूमि) के वैज्ञानिकों ने एक शोध किया है।

इस शोध के अनुसार गन्ने की उत्पादकता बढ़ाने के लिए विकसित किया गया सब-साइलर या चिजलर नामक उपकरण का उपयोग गन्ने की उत्पादकता को 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ाने में सहायक होगा। इस उपकरण को विश्वविद्यालय की कृषि अधिकारियों की बैठक में किसानों के लिए अनुमोदित कर दिया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रौ. समर सिंह ने सब साइलर विकसित



सब साइलर। संवाद

करने वाली टीम को बधाई देते हुए कहा कि टीम ने विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाया है।

सब साइलर या  
चिजलर नामक  
उपकरण के  
उपयोग से बढ़ा-  
सकता है 20-  
30 प्रतिशत  
उत्पादन



प्रौ. समर सिंह।

### ऐसे काम करेगा सब-साइलर

जमीन में कुछ निश्चित गहराई पर संघनन परत बन जाती है, जिससे पौधे की जड़ की वृद्धि और वितरण में कमी आ जाती है। इससे पौधे की जल और पोषक तत्वों को ग्रहण करने की क्षमता कम हो जाती है, जिससे पौधे की वृद्धि रुक जाती है और गन्ना अधिक गिरता है, जिससे पैदावार भी कम हो जाती है। सब-साइलर को विकसित करने वाले सम्म विजानी डॉ. मेहरचंद व सेवानीवृत्त प्रशान मृदा वैज्ञानिक डॉ. विजय कुमार अरोड़ा ने बताया कि विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान उचानी (करनाल) में जमीन की कुछ गहराई पर बनने वाली सघन कठोर परत तोड़ने के लिए इस उपकरण को विकसित किया गया है। लंबे शोध बाद सकारात्मक परिणाम सामने आए और गन्ने की पैदावार में 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ाती हुई।

ऐसे चलाना है खेत में: जमीन के नीचे सख्त सतह को तोड़ने के लिए बिजाई से पहले चिजलर को डेढ़-डेढ़ मीटर की दूरी पर डेढ़ फुट की गहराई में उत्तर से दक्षिण एवं पूर्व से पश्चिम दिशा में चलाना है। चार साल में एक बार चिजलर का उपयोग खेत में अवश्य किया जाना चाहिए। बिजाई के

लिए दो से ढाई फुट पर खुड़ड बनाएं। अगर गन्ने में अतः फसल लेनी हो तो बिजाई तीन फुट पर करें।

ये भी हैं मुख्य कारण: गन्ना भारत और हरियाणा की एक प्रमुख नक्की फसल है, लेकिन खराब प्रबंधन, मृदा की स्थिति, खराब मौसम की स्थिति, मृदा का क्षीण

होना, रोग व कीट आदि कई कारण हैं, जो गन्ने की उत्पादकता पर विपरीत असर डालते हैं। रोपण से लेकर कटाई और चीजों मिल या डिस्टलरी तक परिवहन से भारी मशीनी के चालायात से जुड़े गहन मशीनी करण से मिट्टी की स्थिति खराब हो गई है।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

*दीन क. भास्कर*

समाचार पत्र का नाम.....

दिनांक २०. १०. २०२० पृष्ठ संख्या..... २ ..... कॉलम..... ३-५ .....

## एचएयू के वैज्ञानिकों ने लंबी रिसर्च के बाद तैयार किया सब-साइलर उपकरण गन्ने की 20 से 30 प्रतिशत बढ़ेगी पैदावार

भारक न्हूज़ | हिसार

गन्ने की पैदावार बढ़ाने के लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने रिसर्च की है। रिसर्च के अनुसार गन्ने की उत्पादकता बढ़ाने के लिए विकसित किया गया सब-साइलर या चिलर नामक उपकरण का प्रयोग गन्ने की उत्पादकता को 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ाने में सहायक होगा। उपकरण को एचएयू की कृषि अधिकारियों की बैठक में किसानों के लिए अनुमोदित कर दिया है। एचएयू वैज्ञानिकों के अनुसार जमीन में कुछ निश्चित गहराई पर संघनन परत बन जाती है, जिससे पौधे की जड़ की वृद्धि और वितरण में कमी आ जाती है। इससे पौधे की जल और पोषक तत्वों को ग्रहण करने की क्षमता कम हो जाती है, जिससे पौधे की वृद्धि रुक जाती है व गन्ना अधिक गिरता है, जिससे फसल की पैदावार भी कम हो जाती है।

हालांकि यह प्रभाव मौसम, स्थान और मिट्टी के प्रकार के कारण भी हो सकता है। मृदा संघनन के कारण मिट्टी घनत्व में वृद्धि, छिद्र में कमी, जल भंडारण की क्षमता और जड़ प्रवेश की बाधाएं उत्पन्न होती हैं, जिससे गन्ने की पैदावार कम हो जाती है और किसान जानकारी के अभाव में इस ओर ध्यान नहीं देता।

प्रो. समर सिंह बोले- विवि का गौरव बढ़ाया : एचएयू के कुलपति व सब-साइलर विकसित करने वाली टीम का नेतृत्व करने वाले प्रो. समर सिंह ने बताया कि यह बहुत ही गौरव की बात है कि वैज्ञानिक अपनी कड़ी मेहनत व लगन से किसानों के हित के लिए काम करते हुए विश्वविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। सब-साइलर या चिलर यंत्र को विकसित करने वाली मेरी पूरी टीम बधाई की पात्र है।

**जानिए... कैसे करेगा  
सब-साइलर काम**



सब-साइलर को विकसित करने वाले सत्य विज्ञानी डॉ. मेहरचंद व सेवानिवृत्त प्रधान मृदा वैज्ञानिक डॉ. विजय कुमार अरोड़ा ने बताया कि विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान उचानी (करनाल) में जमीन की कुछ गहराई पर बनने वाली संघनन कठोर परत छेड़ने के लिए इस उपकरण को विकसित किया गया है। लंबी रिसर्च के बाद सकारात्मक परिणाम सामने आए और गन्ने की पैदावार में 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ोत्तरी हुई। जमीन के नीचे सख्त सतह को तोड़ने के लिए विजाई से पहले चिलर को डेढ़-डेढ़ मीटर की दूरी पर डेढ़ फीट की गहराई में उत्तर से दक्षिण एवं पूर्व से पश्चात दिशा में चलाना है। चार साल में एक बार चिलर का प्रयोग खेत में किसान द्वारा अवश्य किया जाना चाहिए। विजाई के लिए दो से अद्भुत फीट पर खुड़ा बनाएं। अगर गन्ने में अंतः फसल लेनी हो तो विजाई तीन फीट पर करें।

### ये हैं मुख्य कारण

गन्ना भारत और हरियाणा की एक प्रमुख नकदी फसल है, लेकिन खराब प्रबंधन, मृदा की स्थिति, खराब मौसम की स्थिति, मृदा का क्षीण होना, रोग व कीट आदि कई कारण हैं जो गन्ने की उत्पादकता पर विपरीत अस डालते हैं। रोग से लेकर कटाई और चीनी मिल या डिस्टिल री तक परिवहन से भारी मशीनरी के यातायात से जुड़े गहन मशीनीकरण से मिट्टी की स्थिति खराब हो गई है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....  
दिनांक २०। १०। २०२० पृष्ठ संख्या..... । ..... कॉलम..... ।-४ .....

**एचएयू वैज्ञानिकों का दावा, उत्पादन 20-30 फीसदी बढ़ेगी**

# सब साइलर बढ़ाएगा गन्ने की पैदावार

हरिगौम न्यूज || हिसार

गन्ने की खेती करने वाले किसानों के लिए खुशखबरी है। गन्ने की पैदावार बढ़ाने के लिए हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एक रिसर्च की है। इस रिसर्च के अनुसार गन्ने की उत्पादकता बढ़ाने के लिए विकसित किया गया सब-साइलर या चिजलर नामक उपकरण का प्रयोग गन्ने की उत्पादकता को 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ाने में सहायक होगा। इस उपकरण को विश्वविद्यालय की कृषि अधिकारियों की बैठक में किसानों के लिए अनुमोदित कर दिया गया है। यह किसानों के उपज बढ़ाने में सहायक होगा।

### जमीन की संघनन परत करती है पैदावार कम

जमीन में कुछ निश्चित गहराई पर सघन परत बन जाती है जिससे पौधे की जड़ की वृद्धि और वितरण में कमी आ जाती है। इससे पौधे की जल और पोषक तत्त्वों को ग्रहण करने की क्षमता कम हो जाती है, जिससे पौधे की वृद्धि रुक जाती है व गन्ना अधिक रिहरा है, जिससे फसल की पैदावार भी कम हो जाती है। हालांकि यह प्रभाव मौसम, स्थान और मिट्टी के प्रकार के कारण भी हो सकता है। मुद्रा संघनन के कारण मिट्टी घनत्व में वृद्धि छिद्र में कमी, जल बंडारण की क्षमता और जड़ प्रवेश की बाधाएं उत्पन्न होती हैं, जिससे गन्ने की पैदावार कम हो जाती है और किसान जागकरी के अभाव में इस ओर ध्यान नहीं दें पाता।



### ऐसे करेगा सब-साइलर काम

वैज्ञानी डॉ. मेहरचंद व रेवानिकृत प्रधान मुद्रा वैज्ञानिक डॉ. विजय कुमार अरोड़ा ने बताया कि विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान उचानी (करनाल) में जमीन की कुछ गहराई पर बनने वाली सघन कठोर परत तोड़ने के लिए इस उपकरण का विकसित किया गया है। जमीन के नीचे सख्त सतह को तोड़ने के लिए बिजार्ड से पहले चिजलर का डेढ़-डेढ़ मीटर की ढाई पर डेढ़ फीट की गहराई में उत्तर से दक्षिण एवं पूर्व से पश्चिम दिशा में चलाना है। चार साल में एक बार चिजलर का प्रयोग खेत में किसान द्वारा अवश्य किया जाना चाहिए।

### विवि का गौरव बढ़ाया : प्रो. समर सिंह

विश्वविद्यालय के कुलपति व सब-साइलर विकसित करने वाली टीम का नेतृत्व करने वाले प्रोफेसर समर सिंह ने बताया कि यह बहुत ही गौरव की बात है कि वैज्ञानिक अपनी कड़ी मेहनत व लगन से किसानों के हित के लिए काम करते हुए विश्वविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। सब-साइलर या चिजलर यंत्र को विकसित करने वाली मेरी पूरी टीम बद्धाई की पात्र है।





## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

प्रैनिक उद्घाटन

समाचार पत्र का नाम.....

दिनांक २०. १०. २०२० पृष्ठ संख्या..... ७ कॉलम..... ३-६

हकृति के वैज्ञानिकों का दावा

# नयी मशीन बढ़ाएगी गन्ने की पैदावार

नरेन्द्र ख्यालिया/निस  
हिसार, 19 अक्टूबर

गन्ने की पैदावार बढ़ाने के लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एक रिसर्च के तहत सब-साइलर या चिजलर नामक उपकरण का विकसित किया है। यह गन्ने की उत्पादकता को 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ाने में सहायक होगा। उपकरण को विश्वविद्यालय की कृषि अधिकारियों की बैठक में किसानों के लिए अनुमोदित कर दिया गया है।

गन्ना विशेषज्ञ वैज्ञानिकों का कहना है कि जमीन में कुछ निश्चित गहराई पर संघनन परत बन जाती है, जिससे पौधे की जड़ की वृद्धि और वितरण में कमी आ जाती है। इससे पौधे की जल और पोषक तत्वों को ग्रहण करने की क्षमता कम हो जाती है। जिसके कारण पौधे की वृद्धि रुक जाती है व गन्ना अधिक गिरता है, जिससे फसल की पैदावार भी कम हो जाती है। किसान जानकारी के अभाव में इस तरफ ध्यान नहीं दे पाता।



गन्ना उत्पादकता  
बढ़ाने के लिए हकृति के  
गन्ना विशेषज्ञों द्वारा  
विकसित किया गया यंत्र  
सब-साइलर। निस

### क्या कहते हैं कुलपति

कुलपति व सब-साइलर विकसित करने वाली टीम का नेतृत्व करने वाले प्रो. समर सिंह ने कहा कि सब-साइलर या चिजलर यंत्र को विकसित करने वाली मेरी पूरी टीम बढ़ाई की पात्र है।

### ऐसे काम करेगा सब-साइलर या चिजलर

सब-साइलर को विकसित करने वाले सर्व विज्ञानी डॉ. मेहरचंद व सेवानिवृत्त प्रधान मृदा वैज्ञानिक डॉ. विजय कुमार अरोड़ा ने बताया कि विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान उचानी (करनाल) में जमीन की कुछ गहराई पर बनने वाली सघन कठोर परत तोड़ने के लिए इस उपकरण को विकसित किया गया है। लंबी रिसर्च के बाद सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं, जिससे गन्ने की पैदावार में 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ोतरी हुई। वैज्ञानिकों का कहना है कि जमीन के बीचे सख्त सतह को तोड़ने के लिए बिजाई से पहले चिजलर को डेढ़-डेढ़ मीटर की दूरी पर डेढ़ फीट की गहराई में उत्तर से दक्षिण एवं पूर्व से पश्चित दिशा में चलाना है। 4 साल में एक बार चिजलर का प्रयोग खेत में किसान द्वारा अवश्य किया जाना चाहिए। बिजाई के लिए 2 से अद्वाई फीट पर खुड़ बनाएं। अगर गन्ने में अंतः फसल लेनी हो तो बिजाई 3 फीट पर करें।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	19.10.2020	--	--

### सब-साइलर बढ़ाएगा गने की पैदावार

एचएयू वैज्ञानिकों ने लंबी रिसर्च के बाद किया दावा



पाठकपक्ष न्यूज़

हिसार, 19 अक्टूबर : गने की खेती करने वाले किसानों के लिए खुशखबरी है। गने की पैदावार बढ़ाने के लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एक रिसर्च की है। इस रिसर्च के अनुसार गने की उत्पादकता बढ़ाने के लिए विकसित किया गया सब-साइलर या चिजलर नामक उपकरण का प्रयोग गने की उत्पादकता को 20 से 30

प्रतिशत तक बढ़ाने में सहायक होगा। इस उपकरण को विश्वविद्यालय की कृषि अधिकारियों की बैठक में किसानों के लिए अनुमोदित कर दिया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति व सब-साइलर विकसित करने वाली टीम का नेतृत्व करने वाले प्रोफेसर समर सिंह ने बताया कि यह बहुत ही गीरव की बात है कि वैज्ञानिक अपनी कड़ी मेहनत व लगन से किसानों के हित के लिए काम करते हुए विश्वविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। सब-साइलर या चिजलर यंत्र को विकसित करने वाली मेरी पूरी टीम बधाई नहीं पात्र है। भविष्य में भी इस प्रकार के शोध कार्य चलते रहेंगे और विश्वविद्यालय का नाम यु हो चमकता रहेगा।





## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पल पल न्यूज	19.10.2020	--	--

### एचएयू का दावा, सब साइलर बढ़ाएगा गन्ने की पैदावार

**पल पल न्यूजः** हिसार, 19 अक्टूबर। गन्ने की खेती करने वाले किसानों के लिए खुशखबरी है। गन्ने की पैदावार बढ़ाने के लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एक रिसर्च की है। इस रिसर्च के अनुसार गन्ने की उत्पादकता बढ़ाने के लिए विकसित किया गया सब-साइलर या चिजलर नामक उपकरण का प्रयोग गन्ने की उत्पादकता को 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ाने में सहायक होगा। इस उपकरण को विश्वविद्यालय की कृषि अधिकारियों की बैठक में किसानों के लिए अनुमोदित कर दिया गया है।

जमीन में कुछ निश्चित गहराई पर संघनन परत बन जाती है जिससे पौधे की जड़ की वृद्धि और वितरण में कमी आ जाती है। इससे पौधे की जल और पोषक तत्वों को ग्रहण करने की क्षमता कम हो जाती है, जिससे पौधे की वृद्धि रुक जाती है व गन्ना अधिक गिरता है, जिससे फसल की पैदावार भी कम हो जाती है। हालांकि यह प्रभाव मौसम,

स्थान और मिट्टी के प्रकार के कारण भी हो सकता है। मृदा संघनन के कारण मिट्टी घनत्व में वृद्धि, छिद्र में कमी, जल भंडारण की क्षमता और जड़ प्रवेश की बाधाएं उत्पन्न होती हैं, जिससे गन्ने की पैदावार कम हो जाती है और किसान जानकारी के अभाव में इस ओर ध्यान नहीं दे पाता। सब-साइलर को विकसित करने वाले सस्य विज्ञानी डॉ. मेहरचंद व प्रोफेसर समर सिंह सेवानिवृत्त प्रधान का फाइल फोटो।



मृदा वैज्ञानिक डॉ. विजय कुमार अरोड़ा ने बताया कि विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान उचानी (करनाल) में जमीन की कुछ गहराई पर बनने वाली संघन कठोर परत तोड़ने के लिए इस उपकरण को विकसित किया गया है। लंबी रिसर्च के बाद सकारात्मक परिणाम सामने आए और गन्ने की पैदावार में 20 से 30 प्रतिशत तक

बढ़ोतरी हुई। जमीन के नीचे सख्त सतह को तोड़ने के लिए बिजाई से पहले चिजलर को डेढ़-डेढ़ मीटर की दूरी पर डेढ़ फीट की गहराई में उत्तर से दक्षिण एवं पूर्व से पश्चिम दिशा में चलाना है। चार साल में एक बार चिजलर का प्रयोग खेत में किसान द्वारा अवश्य किया जाना चाहिए। बिजाई के लिए दो से अँड़ाई फीट पर खुड़ बनाएं। अगर गन्ने में अंत-फसल लेनी हो तो बिजाई तीन फीट पर करें। विश्वविद्यालय के कुलपति व सब-साइलर विकसित करने वाली टीम का नेतृत्व करने वाले प्रोफेसर समर सिंह ने बताया कि यह बहुत ही गौरव की बात है कि वैज्ञानिक अपनी कड़ी मेहनत व लगन से किसानों के हित के लिए काम करते हुए विश्वविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। सब-साइलर या चिजलर यंत्र को विकसित करने वाली मेरी पूरी टीम बधाई की पात्र है। भविष्य में भी इस प्रकार के शोध कार्य चलते रहेंगे और विश्वविद्यालय का नाम यूं ही चमकता रहेगा।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	20.10.2020	--	--

एचएयू वैज्ञानिकों ने लंबी रिसर्च के बाद किया दावा

# सब-साइंस बढ़ाएगा गन्ते की पैदावार

हिसार, 19 अक्टूबर (सुरेंद्र सोढ़ी): गन्ते की खेती करने वाले किसानों के लिए खुशखबरी है। गन्ते की पैदावार बढ़ाने के लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एक रिसर्च की है। इस रिसर्च के अनुसार गन्ते को उत्पादकता बढ़ाने के लिए विकसित किया गया सब-साइंस या चिजलर नामक उपकरण का प्रयोग गन्ते की उत्पादकता को 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ाने में सहायक होगा। इस उपकरण को विश्वविद्यालय की कृषि अधिकारियों की बैठक में किसानों के लिए अनुमेदित कर दिया गया है।

जमीन की सघन परत करती है गन्ते की पैदावार में कमी

जमीन में कुछ निश्चित गहराई पर सघन परत बन जाती है जिससे पौधे की जड़ की वृद्धि और वितरण में कमी आ जाती है। इससे पौधे की जल और पोषक तत्वों को ग्रहण करने की क्षमता कम हो जाती है, जिससे पौधे की वृद्धि रुक जाती है व गत्ता अधिक गिरता है, जिससे फसल की पैदावार भी कम हो जाती है। हालांकि यह प्रभाव मौसम, स्थान और मिट्टी के प्रकार के कारण भी हो सकता है। मूदा सघनन के कारण मिट्टी घनत्व में



विश्वविद्यालय द्वारा विकसित किया गया यंत्र। (दाएं) विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह



### ऐसे करेगा सब-साइंस काम

सब-साइंस को विकसित करने वाले सब्य विजानी डॉ. मेहरबांद व सेवानिवृत्त प्रकान बृद्ध वैज्ञानिक डॉ. विजय कुमार अरोड़ा ने बताया कि विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान ऊर्जा (करनाल) में जमीन की कुछ गहराई पर बनने वाली सघन कठोर परत तोड़ने के लिए इस उपकरण को विकसित किया गया है। लंबी रिसर्च के बाद सकारात्मक परिणाम सामने आए और गन्ते की पैदावार में 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ोत्तरी हुई। जमीन के नीचे सख्त सतह को तोड़ने के लिए विजाइ से पहले चिजलर को डेढ़-डेढ़ मीटर की दूरी पर डेढ़ फीट की गहराई में उत्तर से दौड़ाग एवं पूर्व से पश्चिम दिशा में चलाना है। चार साल में एक बार चिजलर का प्रयोग खेत में किसान द्वारा अवश्य किया जाना चाहिए। विजाइ के लिए दो से अद्भुत फीट पर खुद बनाए। अगर गन्ते में अच-फसल लेनी हो तो विजाइ तीन फीट पर करें।

वृद्धि, छिद्र में कमी, जल भंडारण की कम हो जाती है और किसान क्षमता और जड़ प्रवेश की बाधाएं जानकारी के अभाव में इस ओर ध्यान उत्पन्न होती हैं, जिससे गन्ते की पैदावार

### विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाया:

#### प्रोफेसर समर सिंह

विश्वविद्यालय के कुलपति व सब-साइंस विकासित करने वाली टीम का नेतृत्व करने वाले प्रोफेसर समर सिंह ने बताया कि यह बहुत ही गौरव की बात है कि वैज्ञानिक अपनी कड़ी भेंहनत व लगन से किसानों के हित के लिए काम करते हुए।

विश्वविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। सब-साइंस या चिजलर यंत्र को विकसित करने वाली मेरी पूरी टीम बधाई की पात्र है। बधाई में भी इस प्रकार के शोध कार्य चलाते रहेंगे और विश्वविद्यालय का नाम यूं ही चमकता रहेगा।

### ये कारण भी हैं मुख्य

गता भारत और हरियाणा को एक प्रभुख नक्की फसल है, लेकिन खराब प्रबन्धन, मूदा की स्थिति, खराब मौसम की स्थिति, मूव का दीप होना, रोग व कीट आदि कई कारण हैं जो गन्ते की उत्पादकता पर विपरीत असर डालते हैं। रोपण से लेकर कटाई और चीनी मिल या डिस्ट्रिलरी तक परिवहन से भारी मरीजनीकरण से मिट्टी की स्थिति खराब हो गई है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	19.10.2020	--	--

# सब साइलर बढ़ाएगा गन्ने की पैदावार एचएयू वैज्ञानिकों ने लंबी रिसर्च के बाद किया दावा

सिटी पल्स न्यूज़, हिसार। गन्ने की खेती करने वाले किसानों के लिए खुशखबरी है। गन्ने की पैदावार बढ़ाने के लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एक रिसर्च की है। इस रिसर्च के अनसार गन्ने की उत्पादकता बढ़ाने के लिए विकसित किया गया सब-साइलर या चिजलर नामक उपकरण का प्रयोग गन्ने की उत्पादकता को 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ाने में सहायक होगा। इस उपकरण को विश्वविद्यालय की कृषि अधिकारियों की बैठक में किसानों के लिए अनुमोदित कर दिया गया है।

सब-साइलर को विकसित करने वाले सर्स विज्ञानी डॉ. मेहरचंद व



सेवानिवृत्त प्रधान मृदा वैज्ञानिक डॉ. विजय कुमार अरोड़ा ने बताया कि

विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान उचानी (करनाल) में जमीन की कुछ गहराई पर बनने वाली सघन कठोर परत तोड़ने के लिए इस उपकरण को विकसित किया गया है। लंबी रिसर्च के बाद सकारात्मक परिणाम सामने आए और गत्रे की पैदावार में 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ोत्तरी हुई। कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने बताया कि यह बहुत ही गौरव की बात है कि वैज्ञानिक अपनी कड़ी मेहनत व लगन से किसानों के हित के लिए काम करते हुए विश्वविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। सब-साइलर या चिजलर यंत्र को विकसित करने वाली मेरी पूरी टीम बधाई की पात्र है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	19.10.2020	--	--

## सब साइलर बढ़ाएगा गन्ने की पैदावार

एचएयू वैज्ञानिकों ने  
लंबी रिसर्च के बाद  
किया दावा



समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। गन्ने की खेती करने वाले किसानों के लिए खुशखबरी है। गन्ने की पैदावार बढ़ाने के लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एक रिसर्च की है। इस रिसर्च के अनुसार गन्ने की उत्पादकता

बढ़ाने के लिए विकसित किया गया सब-साइलर या विजलर नामक उत्पादन का 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ाने में सफलता होगा। इस उत्पादण को विश्वविद्यालय की कृषि अधिकारियों की बैठक में किसानों के लिए अनुमोदित कर दिया गया है।

जमीन की सब्जन परत करती है गन्ने की पैदावार में कमी

जमीन में कुछ निहित गहराई पर संघन परत बन जाती है जिससे पौधे को जड़ की चूंदि और वितरण में कमी आ जाती है। इससे पौधे को जल और पोषक तत्वों को ग्रहण करने की क्षमता कम हो जाती है, जिससे पौधे की चूंदि रुक जाती है। फसल की पैदावार भी कम हो जाती है। हालांकि यह प्रभाव मोसम, स्थान और मिट्टी के प्रकार के कारण भी हो सकता है। मृदा संघन के कारण मिट्टी घनत्व में

चूंदि, छिद्र में कमी, जल भेंडाण की क्षमता और जड़ प्रवेश की आधाएं उत्पन्न होती हैं, जिससे गन्ने की पैदावार कम हो जाती है और किसान जानकारी के अभाव में इन ओं व्यापक होती है।

ऐसे करेगा सब-साइलर काम

सब-साइलर को विकसित करने वाले सस्य विज्ञानी डॉ. मेहरचंद व सेवानिवृत्त प्रधान मृदा वैज्ञानिक डॉ. विजय कुमार अरोड़ा ने बताया कि विश्वविद्यालय के

क्षेत्रीय अनुसंधान संश्यान उच्चारी (करनाल) में जमीन की कुछ गहराई पर बनने वाली सब्जन कटोर परत तोड़ने के

लिए इन उत्पादन को विकसित किया गया है। लंबी रिसर्च के बाद सकारात्मक परिणाम सापेने आए औं औं गन्ने की पैदावार में 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ोत्तरी हुई। जमीन के नीचे सख्त स्तरह को तोड़ने के लिए विजाई से पहले विजलर को डें-डें मीटर की दूरी पर

### विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाया : प्रो. समर सिंह

विश्वविद्यालय के कूलपति व सब-साइलर विकसित करने वाली टीम का नेतृत्व करने वाले प्रोफेसर समर सिंह ने बताया कि यह बहुत ही गौरव की बात है कि वैज्ञानिक अपनी कड़ी मेहनत व लगन से किसानों के हित के लिए काम करते हुए विश्वविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। सब-साइलर या विश्वविद्यालय को विकसित करने वाली मेरी पूरी टीम बधाई की पात्र है। भविष्य में भी इस प्रकार के शोध कार्य चलते रहेंगे और विश्वविद्यालय का नाम औं ही चमकता रहेगा।



### यह कारण भी हैं मुख्य

गन्ना भारत और हरियाणा की एक प्रमुख नकदी फसल है, लेकिन खराब प्रबंधन, मृदा की स्थिति, खराब मौसम की स्थिति, मृदा का क्षीण होना, रोग व कॉट आदि कई कारण हैं जो गन्ने की उत्पादकता पर विपरीत असर डालते हैं। रोग से लेकर कटाई औं चींची मिल या डिस्टिलरी तक परिवहन से भारी मरींगीरी के यातायात से जुड़े गहन मरींगीरण से मिट्टी की स्थिति खराब हो गई है।

डें-फोट की गहराई में उत्तर से दक्षिण खेत में किसान द्वारा अवश्य किया जाना एवं पूर्व से पर्यावरण में चलाना है। चाहिए। विजाई के लिए दो दो से अद्याई चार साल में एक बार विजलर का प्रयोग फोट पर खुदू बनाएं।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	19.10.2020	--	--

### सब साइलर बढ़ाएगा गने की पैदावार, एचएयू वैज्ञानिकों ने लंबी रिसर्च के बाद किया दावा



पांच बजे न्यूज

हिसार। गने की खेती करने वाले किसानों के लिए खुशखबरी है। गने की पैदावार बढ़ाने के लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एक रिसर्च की है। इस रिसर्च के अनुसार गने की उत्पादकता बढ़ाने के लिए विकसित किया गया सब-साइलर या चिजलर नामक उपकरण का प्रयोग गने की उत्पादकता को 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ाने में सहायक होगा। इस उपकरण को विश्वविद्यालय की कृषि अधिकारियों की बैठक में किसानों के लिए अनुमोदित कर दिया गया है।

जमीन की संधन परत करती है गने की पैदावार में कमी

जमीन में कुछ निश्चित गहराई पर संधन परत बन जाती है जिससे पौधे की जड़ की वृद्धि और वितरण में कमी आ जाती है। इससे पौधे की जल और पोषक तत्वों को ग्रहण करने की क्षमता कम हो जाती है, जिससे फसल की पैदावार भी कम हो जाती है। हालांकि यह प्रभाव मौसम, स्थान और मिट्टी के प्रकार के कारण भी हो सकता है। मूदा संधन के कारण मिट्टी घनत्व में वृद्धि, छिद्र में कमी, जल भंडारण की क्षमता और जड़ प्रवेश की व्याधाएं उत्पन्न होती हैं, जिससे गने की पैदावार कम हो जाती है और किसान जानकारी के अभाव में इस ओर ध्यान नहीं दे पाता।

#### ऐसे करेगा सब-साइलर काम

सब-साइलर को विकसित करने वाले सस्य विज्ञानी डॉ. मेरवरचंद व सेवानिवृत्त प्रशास्त्री मूदा वैज्ञानिक डॉ. विजय कुमार अरेंड़ा ने बताया कि विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान उचानी (करनाल) में जमीन की कुछ गहराई पर बनने वाली संधन कठोर परत तोड़ने के लिए इस उपकरण को विकसित किया गया है। लंबी रिसर्च के बाद सकारात्मक परिणाम सामने आए और गने की पैदावार में 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ाती हुई। जमीन के नीचे सख्त सतह को तोड़ने के लिए बिजाई से पहले चिजलर को डेढ़-डेढ़ मीटर की दूरी पर डेढ़ फीट की गहराई में उत्तर से दक्षिण एवं पूर्व से पर्यावरण दिशा में चलाना है। चार साल में एक बार चिजलर का प्रयोग खेत में किसान द्वारा अस्थय विकास जाना चाहिए। बिजाई के लिए दो से अंदाही फीट पर खुड़दू बनाएं। अगर गने में अतः फसल लेनी हो तो बिजाई तीन फीट पर करें।

ये कारण भी ही है मूल्य

गना भारत और हरियाणा की एक प्रमुख नकदी फसल है, लेकिन खराब प्रबंधन, मूदा की स्थिति, खराब मौसम की स्थिति, मूदा का क्षीण होना, गोव कीट आदि कहाँ कारण हैं जो गने की उत्पादकता पर विपरीत असर डालते हैं। रोपण से लेकर कटाई और चोनी मिल या डिस्ट्रिंग तक परिवहन से भरी मरीजनरी के यातायात से जड़े हान मरीजनरीकरण से मिट्टी की स्थिति खराब हो गई है।

#### विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाया : प्रो. समर सिंह

विश्वविद्यालय के कुलपति व सब-साइलर विकसित करने वाली टीम का नेतृत्व करने वाले प्रोफेसर समर सिंह ने बताया कि यह बहुत ही गौरव की बात है कि वैज्ञानिक अनन्त कड़ी महनत व लगन से किसानों के हित के लिए काम करते हुए विश्वविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। सब-साइलर या चिजलर यंत्र को विकसित करने वाली मेरी पूरी टीम बधाई की पात्र है। भविष्य में प्रकार के शोध कार्य चलते रहेंगे और विकास का नाम यू ही चमकता रहेगा।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नम छोर	19.10.2020	--	--

### गने की उत्पादकता बढ़ाने के लिए हकूमि ने विकसित किया सब-साइलर

हिसार/19 अक्टूबर/रिपोर्टर

गने की खेती करने वाले किसानों के लिए खुशखबरी है। गने की पैदावार बढ़ाने के लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एक रिसर्च की है। इस रिसर्च के अनुसार गने की उत्पादकता बढ़ाने के लिए विकसित किया गया सब-साइलर या चिजलर नामक उपकरण का प्रयोग गने की उत्पादकता को 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ाने में सहायक होगा। इस उपकरण को विश्वविद्यालय की कृषि अधिकारियों की बैठक में किसानों के लिए अनुमोदित कर दिया गया है। जमीन में कुछ निश्चित गहराई पर संघनन परत बन जाती है जिससे पौधे की जड़ की वृद्धि और वितरण में कमी आ जाती है। इससे पौधे की जल और पोषक तत्वों को ग्रहण करने की क्षमता कम हो जाती है, जिससे पौधे की वृद्धि रुक जाती है व गना अधिक गिरता है, जिससे फसल की पैदावार भी कम हो जाती है। हालांकि यह प्रभाव मौसम, स्थान और मिट्टी के प्रकार के कारण भी हो सकता है। मृदा संघनन

के कारण मिट्टी घनत्व में वृद्धि, छिद्र में कमी, जल भंडारण की क्षमता और जड़ प्रवेश की बाधाएं उत्पन्न होती हैं, जिससे गने की पैदावार कम हो जाती है और किसान जानकारी के अभाव में इस ओर ध्यान नहीं दे पाता। सब-साइलर को विकसित करने वाले सम्प्य विज्ञानी डॉ. मेहरचंद व सेवानिवृत्त प्रधान मृदा वैज्ञानिक डॉ. विजय कुमार अरोड़ा ने बताया कि विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान उचानी (करनाल) में जमीन की कुछ गहराई पर बनने वाली सधन कठोर परत तोड़ने के लिए इस उपकरण को विकसित किया गया है। लंबी रिसर्च के बाद सकारात्मक परिणाम सामने आए और गने की पैदावार में 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ातरी हुई। जमीन के नीचे सख्त सतह को तोड़ने के लिए बिजाई से पहले चिजलर को डेढ़-डेढ़ मीटर की दूरी पर डेढ़ फीट की गहराई में उत्तर से दक्षिण एवं पूर्व से पश्चिम दिशा में चलाना है। चार साल में एक बार चिजलर का प्रयोग खेत में किसान द्वारा अवश्य किया जाना चाहिए। बिजाई के लिए दो से अद्वाई फीट पर खुड़ बनाएं। आगर गने में अंतः फसल लेनी हो तो बिजाई तीन फीट पर करें। गना भारत और हरियाणा की एक प्रमुख नकदी फसल है, लेकिन खराब प्रबंधन, मृदा की स्थिति, खराब मौसम की स्थिति, मृदा का क्षीण होना, रोग व कीट आदि कई कारण हैं जो गने की उत्पादकता पर विपरीत असर डालते हैं। रोपण से लेकर कटाई और चीनी मिल या डिस्टिलरी तक परिवहन से भारी मशीनरी के यातायात से जुड़े गहन मशीनीकरण से मिट्टी की स्थिति खराब हो गई है। विश्वविद्यालय के कुलपति व सब-साइलर विकसित करने वाली टीम का नेतृत्व ने बताया कि यह बहुत ही गौरव की बात है कि वैज्ञानिक अपनी कड़ी मेहनत व लगन से किसानों के हित के लिए काम करते हुए विश्वविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। सब-साइलर या चिजलर यंत्र को विकसित करने वाली मेरी पूरी टीम बधाई की पात्र है। भविष्य में भी इस प्रकार के शोध कार्य चलते रहेंगे और विश्वविद्यालय का नाम यूं ही चमकता रहेगा।



## ਚੌਥੀ ਚਰਣ ਸਿੰਹ ਹਰਿਯਾਣਾ ਕ੃਷ਿ ਵਿਸ਼ਵਵਿਦ्यਾਲਾਨ, ਹਿਸਾਰ ਲੋਕ ਸੰਪਰਕ ਕਾਰਾਈਲਾਨ

ਸਮਾਚਾਰ ਪਤਰ ਕਾ ਨਾਮ	ਦਿਨਾਂਕ	ਪ੃ਛਲੇ ਸੰਖਾ	ਕੱਲਮ
ਦੈਨਿਕ ਟ੍ਰਿਬੂਨ ਪੰਜਾਬੀ	19.10.2020	--	--

### ਗੁਰੂ ਦੀ ਬਿਜਾਈ ਲਈ ਨਵੀਂ ਭਕਨੀਕ ਤਿਆਰ

ਟੋਹਾਣਾ: ਪੇਤੀਬਾੜੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਹਿਸਾਰ ਦੇ ਵਿਗਿਆਨੀਆਂ ਨੇ ਗੁਰੂ ਦੀ ਵੱਧ ਪੇਟਾਵਾਰ ਲੇਣ ਲਈ ਨਵੀਂ ਭਕਨੀਕ ਨਾਲ ਖੇਤ ਦੀ ਜੋੜ ਕਰਨ ਵਾਲਾ ਯੰਤਰ ਤਿਆਰ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਉਪ-ਕੁਲਪਤੀ ਸਮਝ ਸਿੰਘ ਨੇ ਦੱਸਿਆ ਕਿ ਟਰੈਟਰ ਨਾਲ ਚੱਲਣ ਵਾਲੇ ਇਸ ਯੰਤਰ ਨੂੰ ਸਥਾਨਾਈਜ਼ਰ ਦਾ ਨਾ ਦਿੱਤਾ ਗਿਆ ਹੈ। ਗੁਰੂ ਵਿਗਿਆਨੀਆਂ ਨੇ ਦੱਸਿਆ ਕਿ ਗੁਰੂ ਦੀ ਤੇਅ ਫੁੱਲਾਈ ਰੋਚਿਆਈ ਕਰ ਕੇ 20 ਤੋਂ 30 ਫੀਸਦ ਵਾਪ੍ਸੀ ਪੇਟਾਵਾਰ ਹਾਸਲ ਕੀਤੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ। ਡਾ. ਵਿਜੇ ਕੁਮਾਰ ਅਕੰਡਾ ਨੇ ਦੱਸਿਆ ਕਿ ਫੁੱਲੀ ਦੀ ਖਾਸ ਫੁੱਲਾਈ ਤੱਕ ਥੀਜੀ ਫਸਲ ਕਾਫ਼ੀ ਲਾਹੌਰਦ ਸਾਥਤ ਹੋਵੇਗੀ।

ਪੱਤਰ ਪੇਤਰ



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

दिनांक 20.10.2020 पृष्ठ संख्या..... 4 कॉलम..... 2-5

## खेती में पानी बचाने पर करेंगे रिसर्च

**हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में रिसर्च प्रोग्राम कमेटी की बैठक में तय हुआ खाका**

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में सोमवार को रिसर्च प्रोग्राम कमेटी की 49वीं उच्च स्तरीय बैठक आयोजित हुई। इसमें विज्ञानियों को आगामी शोध के लिए विशेष लक्ष्य दिए गए हैं। इस बार विज्ञानियों को किसान की लागत कम करने, जहरमुक्त खेती, कृषि में पानी बचाने के प्रविधान तैयार करने को कहा है। क्योंकि मौजूदा समय में प्रदेश की सरकार और किसानों के सामने यह समस्याएं चुनौतियां बनकर खड़ी हुई हैं। इसके साथ ही ड्रोन व रोबोटिक तकनीकि पर भी रिसर्च के कार्य को आगे बढ़ाया जाएगा।

छोटी से छोटी जोत किसान तक पहुंचाने की बात : विज्ञानियों को फसलों, फलों व सब्जियों की नई किस्मों व तकनीकों को विकसित करते समय उसका लाभ हर छोटी से छोटी जोत वाले किसान तक पहुंचाने का लक्ष्य दिया गया है। इसके साथ ही बदलती जलवायु परिवेश व अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को ध्यान में रखते हुए रिसर्च को आगे बढ़ाया जाएगा।

अब तक एचएयू ने 250 किस्में की हैं इजाज़ : एचएयू में बीते वर्षों में अनाज, दलहन, तिलहन फसलों, सब्जियों और फलों की लगभग 250 किस्में विकसित की जा चुकी हैं। विश्वविद्यालय के पास 17 पेटेंट, 2 डिजाइन, 5 कॉर्पोरेइट और एक व्यापार चिह्न हैं। विश्वविद्यालय का देश के खाद्यान्न भंडारण में अहम रोल है। बैठक के दौरान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद से भी विज्ञानी व उच्च अधिकारी शामिल हुए।



अनुसंधान कार्यक्रम समिति की 49वीं बैठक को संबोधित करते कुलपति प्रोफेसर समर सिंह। साथ में अन्य अधिकारी। ● पीआरओ

**मधुमक्खी पालन, बागवानी व मशरूम खेती को दें बढ़ावा**

कृषि विज्ञानियों ने मधुमक्खी पालन की आधुनिक तकनीकों को अपनाने पर जोर दिया। इस दौरान किसानों से बागवानी के क्षेत्र में भी फलों की उन्नत किस्मों को अपनाने हुए ही मशरूम की विभिन्न किस्मों को अपील की। साथ ही मशरूम की विभिन्न किस्मों को लेकर भी चर्चा की जिनकी मौजूदा समय में औषधीय महता बढ़ रही है। इसके अलावा अधिक उत्पादन क्षमता वाली फसलों की किस्मों, जैविक खेती के साथ गुणवत्तापूर्वक अनुसंधान की दिशा में काम करने का भी आवान किया।

● वैज्ञानिक मौजूदा समय में बदलते जलवायु परिवेश व अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को ध्यान में अपने अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाएं। इसके अलावा जैविक खेती को बढ़ावा दिया जाना चाहिए ताकि गलत खानपान व अधिक रसायनों के प्रयोग से बढ़ रही बीमारियों पर अंकुश लगाया जा सके। -प्रो. समर सिंह, वीसी।

## सब साइलर बढ़ाएगा गन्ने की पैदावार

जागरण संवाददाता, हिसार : गन्ने की खेती करने वाले किसानों के लिए खुशखबरी है। गन्ने की पैदावार बढ़ाने के लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के विज्ञानियों ने एक रिसर्च की है। इस रिसर्च के अनुसार गन्ने की उत्पादकता बढ़ाने के लिए विकसित किया गया सब साइलर या चिजलर नामक उपकरण का प्रयोग गन्ने की उत्पादकता को 20 से 30 फीसद तक बढ़ाने में सहायक होगा।

जमीन की संधनन परत करती है गन्ने की पैदावार में कमी: जमीन में कुछ निश्चित गहराई पर संधनन परत बन जाती

ऐसे करेगा सब साइलर काम  
सब साइलर को विकसित करने वाले सर्व विज्ञानी डा. मेहरचंद व सेवानिवृत्त प्रशान मृदा विज्ञानी डा. विजय कुमार ने बताया कि जमीन की गहराई पर बनने वाली सधन कठोर परत तोड़ने को इस उपकरण को विकसित किया गया।

ये भी मुख्य कारण

गन्ना भारत और हरियाणा की एक प्रमुख नकदी फसल है, लेकिन खराब प्रबंधन, मृदा की स्थिति, खराब मौसम की स्थिति, मृदा का क्षीण होना, रोग व कीट आदि कई कारण हैं जो गन्ने की उत्पादकता पर विपरीत असर डालते हैं।

● सब-साइलर या चिजलर यंत्र गन्ना किसानों की काफी मदद करेगा। विज्ञानियों ने काफी मेहनत से यह मशीन तैयार की है, उन्हें बधाई।

प्रो समर सिंह, कुलपति, एचएयू

है, जिससे पौधे की जड़ की वृद्धि तत्वों को ग्रहण करने की क्षमता और वितरण में कमी आ जाती है। कम हो जाती है, जिससे पौधे की वृद्धि रुक जाती है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

*दोस्रे मासमें*

समाचार पत्र का नाम.....

दिनांक २६. १०. २०२० पृष्ठ संख्या..... ५ ..... कॉलम..... ५-८ .....

# बदलती जलवायु और अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को ध्यान में रख वैज्ञानिक करें रिसर्च : प्रो. समर सिंह

रिसर्च प्रोग्राम कमेटी की 49वीं बैठक में कृषि वैज्ञानिकों में रिसर्च को लेकर हुआ मंथन

भास्कर न्यूज़ | हिसार

बदलते जलवायु परिवेश व अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को ध्यान रखकर वैज्ञानिक अपने अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाएं। इससे जहां फसलों की गुणवत्ता कायम रहेगी, वहीं दूसरी और अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी उनकी डिमांड बढ़ेगी।

यह आँखान एचएयू के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने वैज्ञानिकों से किया। वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से आयोजित रिसर्च प्रोग्राम कमेटी की 49वीं उच्च स्तरीय बैठक को बताएं चेयरमैन संबोधित कर रहे थे।

प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि वैज्ञानिक फसलों, फलों व सब्जियों की नई किस्मों व तकनीकों को विकसित करते समय इस बात का भी खास ध्यान रखें कि उसका लाभ हर छोटी से छोटी जोत वाले किसान तक पहुंचना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमें किसानों को अधिक से अधिक लाभ पहुंचाने के लिए ड्रोन प्रौद्योगिकी, रोबोटिक्स जैसी दूसरी विकसित तकनीकों को अपनाना होगा और किसानों के अनुकूल बनाना होगा।

मधुमक्खी पालन, बागवानी व मशरूम खेती को बढ़ावा देने पर रहा जोर



एचएयू की अनुसंधान कार्यक्रम समिति की 49वीं बैठक को संबोधित करते कुलपति प्रो. समर सिंह।

### एचएयू का देश के खाद्यान भण्डारण में अहम रोल

अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने पिछली बैठक के एजेंडों के बारे में चर्चा की और बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा बीते सालों में अनाज, दलहन, तिलहन फसलों, सब्जियों और फलों की लगभग 250 किस्में विकसित की जा चुकी हैं। एचएयू के पास 17 पेटेंट, 2 डिजाइन, 5 कॉपीराइट और एक व्यापार चिह्न हैं। विश्वविद्यालय का देश के खाद्यान भण्डारण में अहम रोल है। इस दौरान वैज्ञानिकों ने सुझाव दिया कि अगर किसान समझ बनाकर खेती करें तो महंगी तकनीकों के खर्च को बहन करने में सक्षम हो सकते हैं और अधिक लाभ कमाकर आर्थिक रूप से समृद्ध बन सकते हैं। बैठक के दौरान कृषि वैज्ञानिकों ने मधुमक्खी पालन की आधुनिक तकनीकों को अपनाने पर जोर दिया। किसानों से बागवानी के क्षेत्र में भी फलों की उत्तम किस्मों को अपनाने हुए आगे बढ़ने की अपील की। मशरूम की विभिन्न किस्मों को लेकर भी चर्चा की।

### इन्होंने लिया बैठक में हिस्सा

बैठक में एचएयू ही नहीं अपितु प्रदेश के कृषि एवं बागवानी विभाग के महानिदेशक, महिला एवं बाल विकास विभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अलावा विशेष आमंत्रित सदस्य के रूप में राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान करनाल, केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान हिसार, राष्ट्रीय अ३ अनुसंधान संस्थान, हिसार, मत्स्य विभाग हरियाणा, पर्यावरण विभाग के निदेशक, लुवास से अनुसंधान निदेशक, एचएयू के वित्त नियंत्रक सहित एचएयू व लुवास के सभी महाविद्यालयों के अधिकारी एवं निदेशकों ने भाग लेकर विचार साझा किए।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

—पंजाब के सर्वे—

दिनांक २०. १०. २०२० पृष्ठ संख्या..... ३ ..... कॉलम..... ५-६ .....

### बदलती जलवायु व अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को ध्यान में रखकर करें रिसर्च : प्रो. समर सिंह

रिसर्च प्रोग्राम कमेटी  
की उच्च स्तरीय बैठक  
में कृषि वैज्ञानिकों ने  
किया मंथन, भविष्य की  
योजना पर किया  
फोकस

हिसर, 19 अक्टूबर  
(ब्यूरो): वैज्ञानिक मौजूदा  
समय में बदलते जलवायु  
परिवेश व अंतर्राष्ट्रीय  
प्रतिस्पर्धा को ध्यान में अपने  
अनुसंधान कार्य को आगे  
बढ़ाए। इससे जहां फसलों की

गुणवत्ता कायम रहेगी, वहीं अंतर्राष्ट्रीय बाजार में भी उनकी  
डिमांड बढ़ेगी। यह आहान चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि  
विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने वैज्ञानिकों से  
किया। वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से आयोजित  
रिसर्च प्रोग्राम कमेटी की 49 वीं उच्चस्तरीय बैठक को बताए  
चेयरमैन संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक फसलों, फलों व सब्जियों की  
नई किस्मों व तकनीकों को विकसित करते समय इस बात  
का भी खास ध्यान रखें कि उसका लाभ हर छोटी से छोटी  
जोत वाले किसान तक पहुंचना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमें  
किसानों को अधिक से अधिक लाभ पहुंचाने के लिए इन  
प्रौद्योगिकी, रोबोटिक्स जैसी दूसरी विकसित तकनीकों को



संबोधित करते कुलपति प्रो. समर सिंह व उपस्थित अन्य अधिकारी।

अपनाना होगा और किसानों के अनुकूल बनाना होगा।  
अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने पिछली बैठक  
के एजेंडे के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा की। बैठक के दौरान  
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद से भी वैज्ञानिक व उच्च  
अधिकारी शामिल हुए और रिसर्च कार्यक्रम समिति के विभिन्न  
मुद्दों पर समीक्षा की।

इस दौरान वैज्ञानिकों ने सुझाव दिया कि अगर किसान  
समूह बनाकर खेती करें तो महंगी तकनीकों के खर्च को बहन  
करने में सक्षम हो सकते हैं और अधिक से अधिक लाभ  
कमाकर आर्थिक रूप से समृद्ध बन सकते हैं। बैठक के  
दौरान कृषि वैज्ञानिकों ने मधुमक्खी पालन की आधुनिक  
तकनीकों को अपनाने पर जोर दिया।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....जमात.....  
दिनांक २७.१०.२०२० पृष्ठ संख्या.....५.....कॉलम.....५-५.....

### बदलती जलवायु व अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को ध्यान में रखकर करें शोध : प्रो. समर सिंह

हिसार। वैज्ञानिक मौजूदा समय में बदलते जलवायु परिवेश व अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को ध्यान में रखकर अपने शोध कार्य को आगे बढ़ाएं। इससे एक ओर जहाँ फसलों की गुणवत्ता कायम रहेगी, वहीं दूसरी ओर अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी उनकी मांग बढ़ेगी। यह आहवान चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने वैज्ञानिकों से किया। वे सोमवार को विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से आयोजित रिसर्च प्रोग्राम कमेटी की 49वीं उच्च स्तरीय बैठक को बौतर चेयरमैन संबोधित कर रहे थे। अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा बीते सालों में अनाज, दलहन, तिलहन फसलों, सब्जियों और फलों की लगभग 250 किस्में विकसित की जा चुकी हैं। इसके अलावा विश्वविद्यालय के पास 17 पेटेट, 2 डिजाइन, 5 कॉपीराइट और एक व्यापार चिह्न हैं। विश्वविद्यालय का देश के खाद्यान भंडारण में अहम रोल है। बैठक के दौरान कृषि वैज्ञानिकों ने मधुमक्खी पालन की आधुनिक तकनीकों को अपनाने पर जोर दिया। साथ ही मशरूम की विभिन्न किस्मों को लेकर भी चर्चा की, जिनकी मौजूदा समय में औषधीय महत्ता बढ़ रही है। बैठक में प्रदेश के कृषि एवं बागवानी विभाग के महानिदेशक, महिला एवं बाल विकास विभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान करनाल, एचएयू के वित्त नियंत्रक सहित एचएयू व लुबास के महाविद्यालयों के अधिष्ठाता एवं निदेशकों ने भाग लिया। ब्लूरे



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	19.10.2020	--	--

### बदलती जलवायु व अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को ध्यान में रखकर करें रिसर्च : प्रो. समर सिंह

रिसर्च प्रोग्राम कमेटी की उच्च स्तरीय बैठक में कृषि वैज्ञानिकों ने किया मंथन, भविष्य की योजना पर किया ऐक्स

#### पांच बजे ब्यूग

हिसार। वैज्ञानिक मौजूदा समय में बदलते जलवायु परिवेश व अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को ध्यान में अपने अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाएं। इससे एक ओर जहां फसलों की गुणवत्ता काम सही वहां दूसरी ओर अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी उनकी डिमांड बढ़ेगी। यह आहवान चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने वैज्ञानिकों से किया। वे विश्वविद्यालय में ऑफिसान मायम से आयोजित रिसर्च प्रोग्राम कमेटी 49 वीं उच्च स्तरीय बैठक का बतार चेयरमैन संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक फसलों, फलों व सब्जियों की नई किसियों व तकनीकों को विकसित करते समय इस बात का भी खास ध्यान रखें कि उसका लाभ हर छोटी से छोटी जीव वाले किसान तक पहुंचना चाहिए। इसके अलावा जैविक खेतों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए, ताकि गलत खानपान व अधिक स्वास्थ्यों के प्रयोग से बढ़ रही जीवारियों पर अंतुश लगाया जा सके। उन्होंने कहा कि हमें किसानों को अधिक से अधिक लाभ पहुंचाने के लिए ज्ञान प्रौद्योगिकी, रोबोटिक्स जैसी दूसरी विकसित तकनीकों को अपनाना होगा और किसानों के अनुकूल बनाना होगा। उन्होंने भविष्य की चिंता करते हुए कहा कि भविष्यत जल स्तर नीचे जा रहा है और पानी की समस्या दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है, ऐसे में पानी की बचत और त्रिम



गहन प्रौद्योगिकी को अपनाना बहुत ही जरूरी है। उन्होंने किसानों से भी अपील की कि वे विश्वविद्यालय से डिजिटल अधिक से अधिक कृषि सब्जी कानून जानकारी हासिल करें और लाभ उठाएं। विश्वविद्यालय हर समय किसानों की सेवा के तत्पर है।

विश्वविद्यालय का देश के खाद्यान भण्डारण में अहम रोल अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने पिछली बैठक के एंडेंडों के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा की और बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा बतौर सालों में अनाज, दलहन, तिलहन, फसलों, सब्जियों व फलों की लाभगत 250 किसमें विकसित की जा चुकी हैं। इसके अलावा विश्वविद्यालय के पास 17 पेट्रोट, 2 डिजाइन, 5 कॉपीराइट और एक व्यापार चिह्न हैं। विश्वविद्यालय का देश के खाद्यान भण्डारण में अहम रोल है। बैठक के दैरान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद से भी वैज्ञानिक व उच्च अधिकारी शामिल हुए और रिसर्च कार्यक्रम

समिति के विभिन्न महों पर समीक्षा की। इस दैरान वैज्ञानिकों ने सुशाश्व दिया कि अगर किसान समूह बनाकर खेती करें तो महोरी तकनीकों के खर्च को बहन करने में सक्षम हो सकते हैं और अधिक से अधिक लाभ कमाकर अधिक रूप से समृद्ध बन सकते हैं। अनुसंधान निदेशक ने बताया कि विश्वविद्यालय ने इसी वर्ष मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से जारी अटल रैकिंग और इंस्टीट्यूशनल ऑन इनोवेशन एंड एचीवेंट्स में कृषि विश्वविद्यालयों में देशभर में प्रथम स्थान हासिल किया, जो विश्वविद्यालय के लिए बहुत ही गौरव की बात है। इसी प्रकार केंद्रीय मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय भारत सरकार द्वारा वर्ष 2020 के लिए जारी नेशनल इंस्टीट्यूशनल रैकिंग फ्रेमवर्क में विश्वविद्यालय के गृह विज्ञान महाविद्यालय को देशभर में 49वां स्थान जबकि प्रदेश में पहला स्थान मिला था।

मधुमक्खी पालन, बागवानी व



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पल पल न्यूज	19.10.2020	--	--

# बदलती जलवायु व अंतरराष्ट्रीय प्रतिरप्थ को ध्यान में रखकर करें रिसर्च: प्रो. समर सिंह

\* कहा: हमें किसानों को अधिक से अधिक लाभ पहुंचाने के लिए ड्रोन प्रौद्योगिकी, रोबोटिक्स जैसी दूसरी विकसित तकनीकों को अपनाना होगा



पल पल न्यूज़: हिसार, 19

अक्टूबर। वैज्ञानिक मौजूदा समय में बदलते जलवायु परिवेश व अंतरराष्ट्रीय प्रतिरप्थ को ध्यान में रखकर अपने अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाएं। इससे एक ओर जहाँ फसलों की गुणवत्ता कायम रहेगी वहीं दूसरी ओर अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी उनकी डिमांड बढ़ेगी। यह आहान चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने वैज्ञानिकों से किया। वे विश्वविद्यालय में 3०८लाइन माध्यम से आयोजित रिसर्च प्रोग्राम कमेटी की 49 वीं उच्च स्तरीय बैठक को बतौर

चेयरमैन संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक फसलों, फलों व सब्जियों की नई किस्मों व तकनीकों को विकसित करते समय इस बात का भी खास ध्यान रखें कि उसका लाभ हर छोटी से छोटी जोत वाले किसान तक पहुंचना चाहिए। इसके अलावा जैविक खेती को बढ़ावा दिया जाना चाहिए ताकि गलत खानपान व अधिक रसायनों के प्रयोग से बढ़ रही बीमारियों पर अंकुश लगाया जा सके। उन्होंने कहा कि हमें किसानों को अधिक से अधिक लाभ पहुंचाने के लिए ड्रोन प्रौद्योगिकी, रोबोटिक्स जैसी दूसरी विकसित तकनीकों को अपनाना होगा। रोबोटिक्स जैसी दूसरी विकसित तकनीकों को अपनाना होगा और किसानों के अनुकूल बनाना होगा। उन्होंने भविष्य की चिंता करते हुए कहा कि भूमिगत जल स्तर नीचे जा रहा है और पानी की समस्या दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है, ऐसे में पानी की बचत और त्रम गहन प्रौद्योगिकी को अपनाना बहुत ही जरूरी है। उन्होंने किसानों से भी अपील की कि वे विश्वविद्यालय से जुड़ेर अधिक से अधिक कृषि संबंधी जानकारी हासिल करें और लाभ उठाएं। विश्वविद्यालय हर समय किसानों की सेवा के तत्पर है। बैठक में अनुसंधान निदेशक व अनुसंधान कार्यक्रम समिति के सचिव डॉ. एस.के. सहशावत ने बताया कि कार्यक्रम समिति की इस 49वीं बैठक में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ही नहीं अपितु प्रदेश के कृषि एवं बागवानी विभाग के महानिदेशक, महिला एवं बाल विकास विभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अलावा विशेष आमंत्रित सदस्य के रूप में राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान करनाल, केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान हिसार सहित अन्य अधिकारी मौजूद थे।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	19.10.2020	--	--

समस्त हरियाणा

सोमवार, 19 अक्टूबर, 2020

3

## बदलती जलवायु को ध्यान में रखकर करें रिसर्च : वीसी

रिसर्च प्रोग्राम कमेटी  
की उच्च स्तरीय बैठक  
में कृषि वैज्ञानिकों ने  
किया मंथन, भविष्य  
की योजना पर किया  
फोकस



समस्त हरियाणा न्यूज  
हिसार। वैज्ञानिक गौवडा समय में बदलते  
जलवायु परिवेश व अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा  
को ध्यान में अपने अनुसंधान कार्य को  
आगे बढ़ाए। इससे एक ओर जहां फसलों  
की गुणवत्ता कारबम रही तूसी और  
अंतर्राष्ट्रीय बाजार में भी उनको डिमांड  
बढ़ेगी। यह आहुन चौधरी चरण सिंह  
हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कूलपति  
प्रोफेसर समर सिंह ने वैज्ञानिकों से किया।  
वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से  
बीमारियों पर अंकुश लगाया जा सके।

उच्च स्तरीय बैठक को बटौर चेपरमेन से अधिक लाभ पहुंचाने के लिए ऐसे  
संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि प्रौद्योगिकी, रोबोटिक्स जैसी दूसरी  
वैज्ञानिक फसलों, फलों व सब्जियों की विकसित तकनीकों को अपनाना होगा और  
नई किस्में व तकनीकों को विकसित किसानों के अनुकूल बनाना होगा।  
करते समय इस बात का भी खास ध्यान उन्होंने भविष्य की चिंता करते हुए कहा  
करते समय इस बात का भी खास ध्यान उन्होंने भविष्य की चिंता करते हुए कहा  
रखें कि उसका लाभ हर छोटी से छोटी कि भूमित जल स्तर नीचे जा रहा है और और  
जोत वाले किसान तक पहुंचना चाहिए। पानी की समस्या दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है,  
इसके अलावा जैविक खेती को बढ़ावा एसे में पानी की बचत और श्रम गहन  
दिया जाना चाहिए ताकि गलत खानपान व प्रौद्योगिकी को अपनाना बहुत ही जल्दी  
अधिक रसायनों के प्रयोग से बढ़ रही है। बैठक के दौरान कृषि वैज्ञानिकों ने

उन्होंने कहा कि हमें किसानों को अधिक को अपनाने पर जोर दिया। अनुसंधान  
आयोजित रिसर्च प्रोग्राम कमेटी की 49 वीं

बीमारियों पर अंकुश लगाया जा सके। मधुमक्खी पालन की आधुनिक तकनीकों  
वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से

### विवि का देश के खाद्यान भण्डारण में अहम रोल

अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावर ने पिछली बैठक के बारे में विद्यार्थीक चर्चा की और बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा बीते सालों में अनाज, दलहन, तिलहन फसलों, सब्जियों और फलों की लगभग 250 किस्में विकसित की जा चुकी हैं। इसके अलावा विश्वविद्यालय के पास 17 पेटेट, 2 डिजाइन, 5 कॉर्पोरेट और एक व्यापार चिह्न हैं। विश्वविद्यालय का देश के खाद्यान भण्डारण में अहम रोल है। बैठक के दौरान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद से भी वैज्ञानिक व उच्च अधिकारी शामिल हुए और रिसर्च कार्यक्रम समिति के विभिन्न मुद्दों पर समीक्षा की। इस दौरान वैज्ञानिकों ने सुझाव दिया कि अगर किसान समूह बनाकर खेती करें तो महंगी तकनीकों के खर्च को बहन करने में सक्षम हो सकते हैं और अधिक से अधिक लाभ कामकार आधिकरण से समूदू बन सकते हैं।

निदेशक व अनुसंधान कार्यक्रम समिति के में राष्ट्रीय डेवरी अनुसंधान संस्थान समिति डॉ. एस.के. सहरावर ने बताया कि करनाल, केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान कार्यक्रम समिति की इस 49वीं बैठक में हिसार, राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान संस्थान, चौथी चरण सिंह हरियाणा कृषि हिसार, महत्व विभाग हरियाणा, पश्चिमवर्ष विश्वविद्यालय ही नहीं अपितु प्रदेश के विभाग के निदेशक, तुवाचन से अनुसंधान कृषि एवं बागवानी विभाग के निदेशक, एचएन्यू के वित्त नियंत्रक सहित महानिदेशक, महिला एवं बाल विकास एचएन्यू व लुवास के सभी महानिदेशालयों के अलावा विशेष आर्थिक रिसर्च सदस्य के रूप अपने विचार साझा किए।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिसार टूडे	<b>19.10.2020</b>	--	--

## **बदलती जलवायु व अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को ध्यान में रखकर करें रिसर्च : कुलपति**

रिसर्च प्रोग्राम कमेटी की उच्च स्तरीय बैठक में कृषि वैज्ञानिकों ने किया मंथन, भविष्य की योजना पर किया फोकस

टडे न्यूज़ | दिसारा

वैज्ञानिक भी जूदा समझ में बदलते हुए जलवाया परिवेश  
व अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को छाना में अपने  
अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाए। इससे एक और  
जहाँ फसलों की गुणवत्ता कार्यम रही वहाँ दूसरी  
ओं अंतर्राष्ट्रीय बाजार में भी उनकी डिमांड  
बढ़ी। यह आइन्हाँ वौधारी चरण सिंह हरियाणा कृषि  
विभागीयता के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने  
वैज्ञानिकों से किया।

वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से आयोजित रिसर्च प्रोग्राम कम्पटी की 49 वीं उच्च स्तरीय बैचल को बतौर वैदेयमेन संस्कृतिकर रहे थे। उन्होंने कहा कि वैद्यनिक फर्मलों, फलों व सभ्यताओं की नई किसानों व तकनीकों का उत्पादन करते समय इस बात का भी खास ध्यान रखें कि उत्पादन ताप हर छोटी से छोटी जात वाले किसान तक पहुँचना चाहिए। इसके अतावा जैविक खेती को बढ़ावा दिया जाना उत्पादन तक खास ध्यान व अधिक रसायनों के प्रयोग से बढ़ रही वीमारियों पर अंतर्गत लगातार जा सके। उन्होंने कहा कि हमें किसानों को अधिक से अधिक ताप पहुँचोंके लिए प्रयोगी विकल्प, रोबोटिक्स और दूसरी विकासशील तकनीकों को अपनाना होगा और किसानों के अनुकूल बनाना होगा। उन्होंने भविष्य की चिंता करते हुए कहा कि भूमिताल दिन स्तर नीचे जा रहा है और पानी की समस्या दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है ऐसे में पानी की बचत और आप गर्व गण प्रोधायिकी को अपनाना बहुत ही जरूरी है। उन्होंने किसानों से भी अपील की कि वे विश्वविद्यालय से जुड़कर अधिक से अधिक संस्कृती जानकारी हासिल करें और लाभ उठाएं। विश्वविद्यालय हर समय किसानों की सेवा के तत्पर है।



विश्वविद्यालय की अनुसंधान कार्यक्रम समिति के 49 वीं बैठक के दौरान संबोधित करते कुलपति प्रेफेटर समर तिंग व उपस्थित अन्य अधिकारी।

विश्वविद्यालय का देश के खाद्यान भण्डारण में अहम् रोल

अनुसंधान विदेशक डॉ. एस. वे. लहरदारा ने पितृजी बैठक के प्रोटोकॉल के बारे में विस्तारात्मक जीवंत विवरण दिया है। उन्होंने बताया कि विस्तारात्मक जीवंत विवरण सालों में अन्तर्राष्ट्रीय विज्ञान के क्षेत्रों, विज्ञानीय सम्मेलनों और विज्ञानीय सम्प्रयोगों की तात्पर्यमान 250 फिल्में बिकायी जा चुकी हैं। इनके अन्तर्गत विस्तारात्मक विवरण 17 ऐप्टेंडर विज्ञान, 5 कॉम्प्लीटर और एच.डी.ए. प्रयोग की विधियाँ दर्शाते हैं। इन विभिन्न विवरणों का देख के लियाँ आवश्यकता नहीं। अहम रोपें हैं। बैठक के दौरान भारतीय कृषि प्रश्नोत्तरांग परिचय

ते नी दैवानिक व उच्च अधिकारी  
राजित हुए और दिसंवर्ष कार्यक्रम  
लमिटि के दिवाली महुआ पर रसीदी  
की। इस दैवत दैवानिकों ने  
उद्घाटन दिवा कि आप दिवानिक  
समूह बदलाव करें तो करें तो मान  
तकालीकों के बदले को बदल क  
में संबद्ध हो सकते हैं और अभी  
ते अधिक लग्जरी कार्यक्रम अदिव  
रप ते सुख-खल बदल सकते हैं।  
अनुच्छेद विशेषज्ञ वे बताएँ कि  
विश्वविद्यालय ते इन्हीं वर्ष  
मन्त्रालय दिवाना गोपनीय भारत  
सरकार की ओर से जारी अटल

टीका औं इंटर्टेनमेंट ऑन इलेक्ट्रोनिक एं परीफेरल स्टोर (एडवाइज़) में कोई विशेषज्ञता नहीं बोलता तथा उसका ज्ञान, जो विद्युत उत्पादन के लिए बहुत ही गौणित की जाता है। इसी प्रकार कोई भी वर्तमान तकात एवं विकल्प मन्त्रालय अपने विभिन्न विभागों में 2000 के लिए जारी बोलबाल इंस्टीट्यूशन टीका फैटलर्स (डिवाइज़) में विशेषज्ञता के लिए विकास विधायक योग्य विद्यालयों को देखता है। 400 वर्ष जारी रखे गये इन विद्यालयों को प्रेस में पहला तथा जिला था।

इन्हें लिया बैठक में हिस्सा  
 अनुरूपन विशेषक व अनुरूपन कार्यक्रम समिति  
 के लिए डॉ. प्र. के. सहायता ने बताया कि  
 कार्यक्रम सीमित की इस 45वीं बैठक में शोधी  
 दायरा सिंह हारियाणा कृषि विश्वविद्यालय ही वही  
 अधिक प्रदेश के कृषि एवं बागायती विभागों के  
 महाविद्यालय, महाराष्ट्र एवं बंगल विभाग, भारतीय  
 कृषि अनुसंधान परिषद के अन्याया  
 विशेष अनुकूल लक्ष्य के रूप में राष्ट्रीय डैटरी  
 अनुसंधान संस्थान कलाल, कोडीया भील अनुसंधान  
 संस्थान हिस्तर, राजस्थान और अनुसंधान संस्थान,  
 हिमाचल प्रदेश हारियाणा, पर्यावरण विभाग  
 के विशेषक, तुलसा और अनुरूपन विशेषक, एवं यहु  
 के विशेषक सहित एयरवे व लुबास के लिए  
 महाराष्ट्रालयों के अधिकारियों एवं विदेशीों ने भाग  
 लिया एवं विभाग विभाग विभाग।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूं	20.10.2020	--	--

एवण्यू

रिसर्च प्रोग्राम कमेटी की उच्च स्तरीय बैठक में कृषि वैज्ञानिकों ने किया मंथन

# बदलती जलवायु व अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को ध्यान में रखकर करें रिसर्च : प्रोफेसर समर सिंह

सच कहूं संदीप सिंहमार

हिसार। वैज्ञानिक मौजूदा समय में बदलती जलवायु परिवेश व अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को ध्यान में अपने अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाएं। इससे एक ओर जहां फसलों की गुणवत्ता कावय रहेगी वहाँ दूसरी ओर अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी उनकी डिमांड बढ़ेगी। वह आहान चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने वैज्ञानिकों से किया। वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन वाच्यम से आयोजित रिसर्च प्रोग्राम कमेटी की 49 वीं उच्च स्तरीय बैठक को बढ़ावा दिया जाना चाहिए ताकि इसके अलावा जैविक खेती को चर्चा की और बताया जाए। ताकि गलत खानपान व अधिक रसायनों के प्रयोग से बढ़ रही वैश्वानिकों पर अंतुष्ठ लगाया जा सके।



वाले किसान तक पहुंचना चाहिए। के एंजेंटों के बारे में विस्तारपूर्वक विश्वविद्यालय द्वारा बीते सालों में अनाज, दलाल, तिलहन फसलों, सब्जियों और फलों की लगभग 250 किसमें विकसित की जा चुकी हैं। इसके अलावा अनुसंधान परियोग से भी चर्चा की जिनकी मौजूदा समय में औपरीय गहता बढ़ रही है। इसके अलावा अधिक उत्पादन क्षमता वाली फसलों की किस्में, कृषि वैज्ञानिकों ने सुझाव दिया कि आगर किसान समूह बनाकर खेती करें तो महंगी तकनीकों के खर्च को बहन करने में सक्षम हो

खाद्यान भण्डारण में अहम रोल अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने पिछली बैठक

सकते हैं और अधिक से अधिक लाभ कमाकर आर्थिक रूप से समृद्ध बन सकते हैं।

मध्यमक्षीय पालन, बागवानी व मशालम खेती को बढ़ावा देने पर रह जाए।

बैठक के दौरान कृषि वैज्ञानिकों ने मध्यमक्षीय पालन को आयुर्वेदिक तकनीकों को अपनाने पर जोर दिया। इस दौरान किसानों से बागवानी के खेत्र में भी फलों की ऊत विस्तों को अपनावे हुए आगे बढ़ने की अपील की। साथ ही मशालम की विभिन्न किस्मों के लेकर भी चर्चा की जिनकी मौजूदा समय में औपरीय गहता बढ़ रही है। इसके अलावा अधिक उत्पादन क्षमता वाली फसलों की किस्में, कृषि वैज्ञानिकों जैविक खेती के साथ गुणवत्तापूर्वक अनुसंधान की दिशा में काम करने का भी आहान किया।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	19.10.2020	--	--

### बदलती जलवायु व अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को ध्यान में रखकर करें रिसर्च : प्रो. समर सिंह



विश्वविद्यालय की अनुसंधान कार्यक्रम समिति की बैठक को संबोधित करते कुलपति प्रोफेसर समर सिंह व उपस्थित अन्य अधिकारी। (छाया: राज पराशर)

हिसार, 19 अक्टूबर (राज उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक फसलों, फलों व सब्जियों की नई किस्मों व तकनीकों को विकसित करते समय इस बात का भी खास ध्यान रखें कि उसका लाभ हर छोटी से छोटी जोत वाले किसान तक पहुंचना चाहिए। इसके अलावा जैविक खेती को बढ़ावा दिया जाना चाहिए ताकि गलत खानपान व अधिक रसायनों के प्रयोग से बढ़ रही बीमारियों पर अंकुश लगाया जा सके। उन्होंने कहा कि हमें किसानों को अधिक से अधिक लाभ पहुंचाने के लिए ड्रोन प्रौद्योगिकी, रोबोटिक्स जैसी दूसरी विकसित तकनीकों को अपनाना होगा और किसानों के अनुकूल बनाना

हुए कहा कि भूमिगत जल स्तर नीचे जा रहा है और पानी की समस्या दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है, ऐसे में पानी की बचत और श्रम गहन प्रौद्योगिकी को अपनाना बहुत ही जरूरी है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नम छोर	19.10.2020	--	--

# जैविक खेती को बढ़ावा दें वैज्ञानिक : कुलपति

हिसार/19 अक्टूबर/रिपोर्टर

वैज्ञानिक मौजूदा समय में बदलते जलवायु परिवेश व अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को ध्यान में अपने अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाएं। इससे एक ओर जहां फसलों की गुणवत्ता कायम रहेगी वहीं दूसरी ओर अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी उनकी डिमांड बढ़ेगी। यह आहवान चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने वैज्ञानिकों से किया। वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से आयोजित रिसर्च प्रोग्राम कमेटी की 49 वीं उच्च स्तरीय बैठक को बताएं चेयरमैन संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक फसलों, फलों व सब्जियों की नई किस्मों व तकनीकों को विकसित करते समय इस बात का भी खास ध्यान रखें कि उसका लाभ हर छोटी से छोटी जोत वाले किसान तक पहुंचना चाहिए। इसके अलावा जैविक खेती को बढ़ावा दिया जाना चाहिए ताकि गलत खानपान व अधिक रसायनों के प्रयोग से बढ़ रही बीमारियों पर अंकुश लगाया जा सके। उन्होंने कहा कि हमें किसानों को अधिक से अधिक लाभ पहुंचाने के लिए ड्रोन प्रौद्योगिकी, रोबोटिक्स जैसी दूसरी विकसित तकनीकों को अपनाना होगा और किसानों के अनुकूल बनाना होगा। उन्होंने भविष्य की

चिंता करते हुए कहा कि भूमिगत जल स्तर नीचे जा रहा है और पानी की समस्या दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है, ऐसे में पानी की बचत और श्रम गहन प्रौद्योगिकी को अपनाना बहुत ही जरूरी है। उन्होंने किसानों से भी अपील की कि वे विश्वविद्यालय से जुड़कर अधिक से अधिक कृषि संबंधी जानकारी हासिल करें और लाभ उठाएं। विश्वविद्यालय हर समय किसानों की सेवा के तत्पर है। अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा बीते सालों में अनाज, दलहन, तिलहन फसलों, सब्जियों और फलों की लगभग 250 किस्में विकसित की जा चुकी हैं। इसके अलावा विश्वविद्यालय के पास 17 पेटेंट, 2 डिजाइन, 5 कॉर्पोरेइट और एक व्यापार चिह्न हैं। विश्वविद्यालय का देश के खाद्यान भण्डारण में अहम रोल है। बैठक के दौरान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद से भी वैज्ञानिक व उच्च अधिकारी शामिल हुए और रिसर्च कार्यक्रम समिति के विभिन्न मुद्दों पर समीक्षा की। इस दौरान वैज्ञानिकों ने सुझाव दिया कि अगर किसान समूह बनाकर खेती करें तो महंगी तकनीकों के खर्च को वहन करने में सक्षम हो सकते हैं और अधिक से अधिक लाभ कमाकर आर्थिक रूप से समृद्ध बन सकते हैं।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उत्तम हिन्दू न्यूज	19.10.2020	--	--

### बदलते जलवायु परिवेश व अंतर्राष्ट्रीय प्रतिरप्थी के मुद्देनजर वैज्ञानिक कार्य को आगे बढ़ाएः प्रो. समर

चंडीगढ़/उत्तम हिन्दू न्यूज  
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे मौजूदा समय में बदलते जलवायु परिवेश व अंतर्राष्ट्रीय प्रतिरप्थी को ध्यान में रखते हुए अपने अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाएँ। इससे एक ओर जहां फसलों की गुणवत्ता कायम रहेगी वहीं दूसरी ओर अंतर्राष्ट्रीय बाजार में भी उनकी डिमांड बढ़ेगी। वे विश्वविद्यालय में औनलाइन माध्यम से आयोजित रिसर्च प्रोग्राम कमेटी की 49 वीं उच्च स्तरीय बैठक को बतौर चेयरमैन संबोधित कर रहे थे। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने पिछली बैठक के एजेंटों के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा की। बैठक में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद से भी वैज्ञानिक व उच्च अधिकारी शामिल हुए और रिसर्च कार्यक्रम समिति के विभिन्न मुद्दों पर समीक्षा की। इस दौरान वैज्ञानिकों ने सुझाव दिया कि अगर किसान समूह बनाकर खेती करें तो मंहगी तकनीकों के खर्च को घटन करने में सक्षम हो सकते हैं और अधिक से अधिक लाभ कमाकर आर्थिक रूप से समृद्ध बन सकते हैं। अनुसंधान निदेशक व अनुसंधान कार्यक्रम समिति के सचिव डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि कार्यक्रम समिति की इस 49वीं बैठक में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ही नहीं अपनु प्रदेश के कृषि एवं बागवानी विभाग के महानिदेशक, महिला एवं बाल विकास विभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अलावा विशेष आमत्रित सदस्य के रूप में गण्डीज डेवलपर अनुसंधान संस्थान कलनाल, केंद्रीय और अनुसंधान संस्थान हिसार सहित एवं यू.व.लुवास के सभी महाविद्यालयों के अधिकारी एवं निदेशकों ने भाग लेकर अपने विचार साझा किए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार  
लोक संपर्क कार्यालय

दूरी : ३०५

समाचार पत्र का नाम.....  
दिनांक २०. १०. २०२० पृष्ठ संख्या..... ९ ..... कॉलम..... २०४ .....

# हरियाणा हिसार-फतेहाबाद-सिरसा भूमि

रोहतक, मंगलवार 20 अक्टूबर 2020

## एचएयू के बीएससी एग्रीकल्पर, मत्स्य कोर्स में 12000 विद्यार्थी देंगे प्रवेश परीक्षा

हरियाणा न्यूज ||| हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बीएससी एग्रीकल्पर तथा मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स के लिए 24 अक्टूबर के प्रवेश परीक्षा आयोजित की जाएगी। इसके लिए विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं।

विवि कुलसचिव डॉ. वीआर कंबोज ने बताया कि बीएससी एग्रीकल्पर व मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स के लिए परीक्षा का आयोजन कोरोना महामारी के चलते केंद्र एवं प्रदेश सरकार द्वारा जारी हिदायतों का पालन करते हुए जिस जारी रहा है, जिसमें कोर्ब 12000 परीक्षार्थी परीक्षा देंगे। उन्होंने बताया कि प्रवेश परीक्षाओं के लिए हिसार व हासी क्षेत्र के 24 स्कूलों में परीक्षा केंद्र



### परीक्षा के दौरान सामाजिक दूरी का रखा जाएगा ध्यान

- चार वर्षीय कोर्स के लिए 24 अक्टूबर के प्रवेश परीक्षा परीक्षा की जाएगी।
- विवि प्रशासन की ओर से सभी तैयारियां पूरी



- प्रवेश परीक्षा की सभी तैयारियां पूरी, हिसार व हासी के 24 स्कूलों में बनाए गए परीक्षा केंद्र
- परीक्षार्थी 20 अक्टूबर से डाउनलोड कर सकते हैं एडमिट कार्ड

समस्या का सामना न करना पड़े और कोरोना महामारी के चलते जारी हिदायतों की सही तरीके से पालन हो सके। सभी परीक्षा केंद्रों को परीक्षा से पहले सेनेटाइज कराया जाएगा और सामाजिक दूरी व मास्क का भी विशेष ध्यान रखा जाएगा।

### एचएयू कैंपस के अलावा शहर और हासी में बनाए गए परीक्षा केंद्र

परीक्षा विद्यक्रम डॉ. स्कूल के बताया कि इन परीक्षाओं के लिए करीब 12000 विद्यार्थियों ने अलालाइन आवेदन किया था, जिसमें से 11692 ने बीएससी एग्रीकल्पर और कोर्ब 500 ने बीएससी मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स के लिए आवेदन किया था। उन्होंने बताया कि इन प्रवेश परीक्षाओं के सफल आयोजन के लिए हिसार व हासी के 24 स्कूलों में परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं, जिनमें विविधविद्यालय के कृषि महाविद्यालय, गुरु विजान महाविद्यालय, कृषि अभियानिकों द्वारा प्रोटाइप्सी कॉम्प्लेक्स महाविद्यालय, मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय, कैन्सर स्कूल, ठाकुर दास मार्ग वरिष्ठ जागरूकता विद्यालय, गुरु जगेश्वर वरिष्ठ जागरूकता विद्यालय, लूमिन डेस्ट वरिष्ठ जागरूकता विद्यालय, सीआर परिवाक स्कूल, विद्या मार्गी परिवाक स्कूल, विद्या इंस्टीट्यूशनल स्कूल, विद्या इंस्टीट्यूशनल स्कूल, डीएसी परिवाक स्कूल, डीएसी परिवाक स्कूल, रीट कॉलेज, रीट कॉलेज स्कूल, और एम परिवाक विद्यालय, एफ सी महिला महाविद्यालय के अलावा हासी क्षेत्र के भी काली देवी विद्या एवं स्कूल, हासी, आरपीएस नाडी (हासी), श्री कृष्ण प्राक्ती स्कूल हासी, हिंदू वरिष्ठ जागरूकता विद्यालय हासी, यदुवाणी स्कूल तथा बाबा बदा बहादुर परिवाक स्कूल शामिल हैं।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

दैनिक भास्कर

दिनांक २५.१०.२०२० पृष्ठ संख्या.....२ कॉलम.....५५

## बीएससी एग्रीकल्चर व मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स में 12 हजार विद्यार्थी देंगे प्रवेश परीक्षा

हिसार | चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बीएससी एग्रीकल्चर व मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स के लिए 24 अक्टूबर को प्रवेश परीक्षा आयोजित की जाएगी। विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बीआर कंबोज ने बताया कि बीएससी एग्रीकल्चर व मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स के लिए परीक्षा का आयोजन कोरोना महामारी के चलते केंद्र व राज्य सरकार द्वारा जारी हिदायतों का पालन करते हुए किया जा रहा है, जिसमें करीब 12 हजार परीक्षार्थी परीक्षा देंगे। प्रवेश परीक्षाओं के लिए

■ हिसार और हांसी के स्कूलों में बनाए परीक्षा केंद्र लिए गए हैं। परीक्षा में परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं। परीक्षा सुबह 10 बजकर 30 मिनट से दोपहर एक बजे तक आयोजित की जाएगी।

परीक्षा नियंत्रक डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि इन परीक्षाओं के लिए करीब 12 हजार विद्यार्थियों ने ऑनलाइन आवेदन किया था, जिसमें से 11692 ने बीएससी एग्रीकल्चर और करीब 500 ने बीएससी मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स के लिए आवेदन किया था। इन प्रवेश परीक्षाओं के सफल आयोजन के लिए हिसार व हांसी के 24 स्कूलों में परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं, जिनमें विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय, गृह विज्ञान महाविद्यालय, कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय, कैपस स्कूल, ठाकुर दास भार्गव वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, गुरु जंभेश्वर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, ब्लूमिंग डेल्स वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सीआर पब्लिक स्कूल, विद्या भारती पब्लिक स्कूल, सिद्धार्थ इंटरनेशनल स्कूल, विश्वास वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, न्यू यशोदा पब्लिक स्कूल, डी.ए.वी. पुलिस पब्लिक स्कूल, सी.आर. लॉ कॉलेज, सेंट कबीर स्कूल, ओम स्टरलिंग यूनिवर्सिटी, एफ.सी. महिल महाविद्यालय के अलावा हांसी क्षेत्र के श्री काली देवी विद्या मंदिर स्कूल, हांसी, आरपीएस गढ़ी(हांसी), श्री कृष्ण प्रणामी स्कूल हांसी, हिंदू वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय हांसी, यदुवंशी स्कूल व बाबा बंदा बहादुर पब्लिक स्कूल शामिल हैं।

### 20 से मिलने शुरू हो जाएंगे एडमिट कार्ड

परीक्षा नियंत्रक डॉ. एसके पाहुजा ने बताया कि प्रवेश परीक्षा के लिए परीक्षार्थी विश्वविद्यालय की वेबसाइट से 20 अक्टूबर से अपने एडमिट कार्ड डाउनलोड कर सकते हैं। इसके बावजूद अगर किसी परीक्षार्थी को कोई परीक्षा संबंधी परेशानी है तो वह एचएयू की वेबसाइट पर दिए गए संपर्क नंबर से संपर्क कर सकता है।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

पंजाब के सरी

समाचार पत्र का नाम.....

दिनांक २०। १०। २०२० पृष्ठ संख्या..... २ ..... कॉलम..... ५-५

## बी.एससी. एग्रीकल्चर व मत्स्य के 4 वर्षीय कोर्स में 12000 विद्यार्थी देंगे प्रवेश परीक्षा

हिसार, 19 अक्टूबर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बी.एससी. एग्रीकल्चर व मत्स्य के 4 वर्षीय कोर्स के लिए 24 अक्टूबर को प्रवेश परीक्षा आयोजित की जाएगी। इसके लिए विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज ने बताया कि बी.एससी. एग्रीकल्चर व मत्स्य के 4 वर्षीय कोर्स के लिए परीक्षा का आयोजन कोरोना

महामारी के चलते केंद्र व राज्य सरकार द्वारा जारी हिदायतों का पालन करते हुए किया जा रहा है, जिसमें करीब 12000 परीक्षार्थी परीक्षा देंगे।

उन्होंने बताया कि प्रवेश परीक्षाओं के लिए हिसार व हांसी क्षेत्र के 24 स्कूलों में परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं। परीक्षा सुबह 10 बजकर 30 मिनट से दोपहर एक बजे तक आयोजित की जाएगी। परीक्षा नियंत्रक डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि इन परीक्षाओं के लिए करीब 12000 विद्यार्थियों ने ऑनलाइन आवेदन किया था, जिसमें से 11692 ने बी.एस.सी. एग्रीकल्चर और करीब 500 ने बी.एस.सी. मत्स्य के 4 वर्षीय कोर्स के लिए आवेदन किया था। उन्होंने बताया कि इन प्रवेश परीक्षाओं के सफल आयोजन के लिए

हिसार व हांसी के 24 स्कूलों में परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं, जिनमें विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय, गृह विज्ञान महाविद्यालय, कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय, कैपस स्कूल, ठाकुर दास भार्गव वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, गुरु जंभेश्वर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, ब्लूर्मिंग डेल्स वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सीआर पब्लिक स्कूल, विद्या भारती पब्लिक

**सभी तैयारियां पूरी,  
हिसार व हांसी के 24  
स्कूलों ने बनाए गए  
परीक्षा केंद्र**

स्कूल, सिन्द्धार्थ इंटरनेशनल स्कूल, विश्वास वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, न्यू यशोदा पब्लिक स्कूल, डॉ. ए.वी. पुलिस पब्लिक स्कूल, सी.आर. लॉ कॉलेज, सेंट कबीर स्कूल, ओम स्टिरलिंग यूनिवर्सिटी, एफ.सी. महिला महाविद्यालय के अलावा हांसी क्षेत्र के श्री काली देवी विद्या मंदिर स्कूल, हांसी, आरपीएस गढ़ी (हांसी), श्रीकृष्ण प्रणामी स्कूल हांसी, हिंदू वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय हांसी, यदुवंशी स्कूल व बाबा बंदा बहादुर पब्लिक स्कूल शामिल हैं। परीक्षा नियंत्रक डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि प्रवेश परीक्षा के लिए परीक्षार्थी विश्वविद्यालय की वैबसाइट से 20 अक्टूबर से अपने एडमिट कार्ड डाउनलोड कर सकते हैं।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

२५ नोवेंबर २०२०

दिनांक २०. १०. २०२० पृष्ठ संख्या ५ कॉलम २५

### एचएयू के बीएससी एग्रीकल्चर व मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स में 12000 विद्यार्थी देंगे प्रवेश परीक्षा

जागरण संवाददाता, हिसार : हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बीएससी एग्रीकल्चर व मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स के लिए 24 अक्टूबर को प्रवेश परीक्षा आयोजित की जाएगी। कुलसचिव डा. बीआर कंबोज ने बताया कि बीएससी एग्रीकल्चर व मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स में करीब 12000 परीक्षार्थी परीक्षा देंगे। प्रवेश परीक्षाओं के लिए हिसार व हांसी क्षेत्र के 24 स्कूलों में केंद्र बनाए गए हैं। परीक्षा सुबह 10 बजकर 30 मिनट से दोपहर एक बजे तक आयोजित की जाएगी।

12000 विद्यार्थियों ने ऑनलाइन आवेदन किया था। 11692 ने बीएससी एग्रीकल्चर और करीब 500 ने बीएससी मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स के लिए आवेदन

आज से मिलेंगे एडमिट कार्ड परीक्षा नियंत्रक डा. एसके पाहुजा ने बताया कि प्रवेश परीक्षा के लिए परीक्षार्थी विश्वविद्यालय की वेबसाइट से 20 अक्टूबर से अपने एडमिट कार्ड डाउनलोड कर सकते हैं। इसके बावजूद अगर किसी परीक्षार्थी को कार्ड परीक्षा संबंधी परेशानी है तो वह विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर दिए गए नंबर से संपर्क कर सकता है।

किया था। परीक्षाओं के लिए बनाए केंद्र : विवि के कृषि महाविद्यालय, गृह विज्ञान महाविद्यालय, कृषि अधियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय, कैपस

स्कूल, ठाकुर दास भार्गव वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, गुरु जंभेश्वर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, ब्लूमिंग डेल्स वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सीआर पब्लिक स्कूल, विद्या भारती पब्लिक स्कूल, सिद्धार्थ इंटरनेशनल स्कूल, विश्वास वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, न्यू यशोदा पब्लिक स्कूल, डीएवी. पुलिस पब्लिक स्कूल, सीआर. लॉ कॉलेज, सेंट कवीर स्कूल, ओम स्टिरलिंग यूनिवर्सिटी, एफ.सी. महिला महाविद्यालय के अलावा हांसी क्षेत्र के श्री काली देवी विद्या मंदिर स्कूल, हांसी, आरपीएस गढ़ी(हांसी), श्री कृष्ण प्रणामी स्कूल हांसी, हिंदू वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय हांसी, यदुवंशी स्कूल व बाबा बंदा बहादुर पब्लिक स्कूल शामिल हैं।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

डाभर उत्ता

दिनांक २०.१०.२०२० पृष्ठ संख्या ५ कॉलम ३

### एचएयू के बीएससी एग्रीकल्चर व मत्स्य कोर्स की प्रवेश परीक्षा 24 को

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बीएससी एग्रीकल्चर व मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स के लिए 24 अक्टूबर को प्रवेश परीक्षा आयोजित की जाएगी। कुलसंचिव डॉ. बीआर कंबोज ने 24 हजार परीक्षार्थियों के लिए हिसार व हांसी के 24 स्कूलों में बनाए गए परीक्षा केंद्रों के लिए हिसार व हांसी क्षेत्र के 24 स्कूलों में परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं। परीक्षा सुबह 10:30 बजे से दोपहर एक बजे तक आयोजित की जाएंगी। परीक्षा नियंत्रक डॉ. एसके पाहुजा ने बताया कि लगभग 12 हजार विद्यार्थियों ने ऑनलाइन आवेदन किया था, जिसमें से 11692 ने बीएससी एग्रीकल्चर और करीब 500 ने बीएससी मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स के लिए आवेदन किया था। उन्होंने बताया कि प्रवेश परीक्षा के लिए परीक्षार्थी विश्वविद्यालय की वेबसाइट से 20 अक्टूबर से अपने एडमिट कार्ड डाउनलोड कर सकते हैं। ब्लू



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूँ	20.10.2020	--	--

# एचएयू के बीएससी एग्रीकल्चर कोर्स में 12000 विद्यार्थी देंगे प्रवेश परीक्षा

■ प्रवेश परीक्षा की सभी तैयारियां पूरी, परीक्षार्थी 20 अक्टूबर से  
डाउनलोड कर सकते हैं एडमिट कार्ड

हिसार (सच कहूँ न्यूज)। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बीएससी एग्रीकल्चर के चार वर्षीय कोर्स के लिए 24 अक्टूबर को प्रवेश परीक्षा आयोजित की जाएगी। इसके लिए विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। यह जानकारी देते हुए विश्वविद्यालय के कुलाशचिव डॉ. ची.आर. कंबोज ने बताया कि बीएससी एग्रीकल्चर व के चार वर्षीय कोर्स के लिए परीक्षा का आयोजन कोरोना महामारी के चलते केंद्र व राज्य सरकार द्वारा जारी हिदायतों का पालन करते हुए किया जा रहा है, जिसमें करीब 12000 परीक्षार्थी परीक्षा देंगे। उन्होंने बताया कि प्रवेश परीक्षाओं के लिए हिसार व हांसी क्षेत्र के 24 स्कूलों में परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं ताकि परीक्षार्थियों को किसी प्रकार की समस्या का सामना न करना पड़े।

और कोरोना महामारी के चलते जारी हिदायतों का भी सही तरीके से पालन हो सके। परीक्षा सुबह 10 बजकर 30 मिनट से दोपहर एक बजे तक आयोजित की जाएगी। एचएयू कैंपस के अलावा हिसार व हांसी के स्कूलों में बनाए गए हैं परीक्षा केंद्र।

परीक्षा नियंत्रक डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि इन परीक्षाओं के लिए करीब 12000 विद्यार्थियों ने ऑनलाइन आवेदन किया था, जिसमें से 11692 ने बीएससी एग्रीकल्चर और करीब 500 ने बीएससी मर्ट्स्य के चार वर्षीय कोर्स के लिए आवेदन किया था। उन्होंने बताया कि इन प्रवेश परीक्षाओं के सफल आयोजन के लिए हिसार व हांसी के 24 स्कूलों में परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं, जिनमें विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय, गृह विज्ञान महाविद्यालय, कृषि अभियांत्रिकी महाविद्यालय, कृषि अभियांत्रिकी

एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय, कैंपस स्कूल, टाकुर दास भार्वच वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, गुरु जंगेश्वर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, ब्लूमिंग डेल्स वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सीआर पब्लिक स्कूल, विद्या भारती पब्लिक स्कूल, सिद्धार्थ इंटरनेशनल स्कूल, विश्वास वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, न्यू वशोटा पब्लिक स्कूल, डी.ए.वी. पुलिस पब्लिक स्कूल, सी.आर. लॉ कॉलेज, सेंट कवीर स्कूल, ओम स्टिरलिंग यूनिवर्सिटी, एफ. सी. महिला महाविद्यालय के अलावा हांसी क्षेत्र के श्री काली देवी विद्या मंदिर स्कूल, हांसी, आरपीएस गढ़ी (हांसी), श्री कृष्ण प्रणाली स्कूल हांसी, हिंदू वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय हांसी, यदुवंशी स्कूल व बाबा बंदा बहादुर पब्लिक स्कूल शामिल हैं।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	19.10.2020	--	--

### सार समाचार

**एचएयू के बीएससी एग्रीकल्चर व मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स में 12000 विद्यार्थी देंगे प्रवेश परीक्षा**  
प्रवेश परीक्षा की सभी तैयारियां पूरी, हिसार व हांसी के 24 स्कूलों में बनाए गए परीक्षा केंद्र

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बीएससी एग्रीकल्चर व मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स के लिए 24 अक्टुबर को प्रवेश परीक्षा आयोजित की जाएगी। इसके लिए विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। यह जानकारी देते हुए विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज ने बताया कि बीएससी एग्रीकल्चर व मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स के लिए परीक्षा का आयोजन कोरोना महामारी के चलते केंद्र व राज्य सरकार द्वारा जारी हिदायतों का पालन करते हुए किया जा रहा है, जिसमें करीब 12000 परीक्षार्थी परीक्षा देंगे। उन्होंने बताया कि प्रवेश परीक्षाओं के लिए हिसार व हांसी क्षेत्र के 24 स्कूलों में परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं ताकि परीक्षार्थियों को किसी प्रकार की समस्या का सामना न करना पड़े और कोरोना महामारी के चलते जारी हिदायतों का भी सही तरीके से पालन हो सके। सभी परीक्षा केंद्रों को परीक्षा से पहले सेनेटाइज कराया जाएगा और सामाजिक दूरी व मास्क का भी विशेष ध्यान रखा जाएगा। इसके अलावा सभी परीक्षार्थियों को विश्वविद्यालय की ओर से ही परीक्षा केंद्र के प्रवेश द्वार पर हाथ सेनेटाइज करवाने के बाद फेस मास्क मुहैया करवाए जाएंगे, ताकि कोरोना के खतरे से निपटने के लिए सतर्कता बरती जा सके। परीक्षा सुबह 10 बजकर 30 मिनट से दोपहर एक बजे तक आयोजित की जाएगी।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	20.10.2020	--	--

### एचएप्यू के बीएससी एग्रीकल्चर व मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स में 12000 विद्यार्थी देंगे प्रवेश परीक्षा

हैलो हिसार न्यूज

हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बीएससी एग्रीकल्चर व मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स के लिए 24 अक्टुबर को प्रवेश परीक्षा आयोजित की जाएगी। इसके लिए विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। यह जानकारी देते हुए विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज ने बताया कि बीएससी एग्रीकल्चर व मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स के लिए परीक्षा का आयोजन कोरोना महामारी के चलते केंद्र व राज्य



सरकार द्वारा जारी हिदायतों का पालन करते हुए किया जा रहा है, जिसमें करीब 12000 परीक्षार्थी परीक्षा देंगे। उन्होंने बताया कि प्रवेश परीक्षाओं के लिए हिसार व हांसी क्षेत्र के 24 स्कूलों में परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं ताकि परीक्षार्थीयों को किसी प्रकार की समस्या का सामना न करना पड़े और कोरोना महामारी के चलते जारी हिदायतों का भी सही तरीके से पालन हो सके। सभी परीक्षा केंद्रों को परीक्षा से पहले सेनेटाइज कराया जाएगा और सामाजिक दूरी व मास्क का भी विशेष ध्यान रखा जाएगा।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पल पल न्यूज	19.10.2020	--	--

### एचएयू के बीएससी एग्रीकल्चर और मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स में 12000 विद्यार्थी देंगे प्रवेश परीक्षा

पल पल न्यूज़: हिसार, 19 अक्टूबर। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बीएससी एग्रीकल्चर व मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स के लिए 24 अक्टूबर को प्रवेश परीक्षा आयोजित की जाएगी। इसके लिए विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। यह जानकारी देते हुए विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज ने बताया कि बीएससी एग्रीकल्चर व मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स के लिए परीक्षा का आयोजन कोरोना महामारी के चलते केंद्र व राज्य सरकार द्वारा जारी हिदायतों का पालन करते हुए किया जा रहा है, जिसमें करीब 12000 परीक्षार्थी परीक्षा देंगे। उन्होंने बताया कि प्रवेश परीक्षाओं के लिए हिसार व हांसी क्षेत्र के 24 स्कूलों में परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं ताकि परीक्षार्थियों को

किसी प्रकार की समस्या का सामना न करना पड़े और कोरोना महामारी के चलते जारी हिदायतों का भी सही तरीके से पालन हो सके। सभी परीक्षा केंद्रों को परीक्षा से पहले



सेनेटाइज कराया जाएगा। इसके अलावा सभी परीक्षार्थियों को विश्वविद्यालय की ओर से ही परीक्षा केंद्र के प्रवेश द्वार पर हाथ सेनेटाइज करवाने के बाद फेस मास्क मुहैया करवाए जाएंगे, ताकि अन्दर खतरे से निपटने के 6/8 के बरती जा सके। परीक्षा सुबह 10 बजकर 30 मिनट से दोपहर एक बजे तक आयोजित की जाएगी।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....  
*भैनीक जागरण*

दिनांक २०.१०.२०२० पृष्ठ संख्या २ कॉलम ४-५

## ईमानदारी से काम करें तो वायु प्रदूषण से निपट सकते हैं : आरओ भोसले

जागरण संगठनाता, हिसार : राइट-टू क्लीन एयर संस्था के द्वारा बहुत चर्चित विषय फसल अवशेषों को जलाने से होने वाले प्रदूषण पर एक ऑनलाइन वेबिनार फसल अवशेष को जलाना कारण और निवारण का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में कृषि विशेषज्ञों, हरियाणा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अधिकारी और किसानों सहित 30 से अधिक व्यक्तियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए संचालिका डा. सुनीता श्योकंद ने कहा कि दिन-प्रतिदिन वायु प्रदूषण बढ़ता जा रहा है, जो चिंताजनक है। उन्होंने प्रदूषण से होने वाले नुकसान

### पर्यावरण संरक्षण

- दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा वायु प्रदूषण हानिकारक
- पराली में नाइट्रोज, फास्फोरस और कार्बनिक पदार्थ की अधिकता

के बारे में बताते हुए कहा कि कोविड-19 के समय में वायु प्रदूषण से दुष्परिणाम और भी बढ़ गए हैं।

हरियाणा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अधिकारी आरओ भोसले ने वायु प्रदूषण के प्रमुख कारणों और उसके मानव पर पड़ रहे दुष्प्रभाव के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि हम सभी की नैतिक जिम्मेदारी बनती

है कि ईमानदारी से ऐसे प्रयास करें जिससे कि वायु प्रदूषण की समस्या से निपटा जा सके।

कार्यक्रम में कृषि अभियंत्रिकी महाविद्यालय, चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार के विज्ञानी डा. मुकेश जैन ने कहा कि धान की कटाई के पश्चात गेहूं की फसल की बुवाई के बीच का अंतराल कम होने की वजह से और खेतों को जल्दी खाली करने के लिए किसान कई बार पराली में आग लगा देते हैं, जोकि उचित नहीं है। उन्होंने कहा कि पराली में काफी मात्रा में नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश और कार्बनिक पदार्थ होते हैं।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

मैट्रिक्युलेशन के नं १२७।

समाचार पत्र का नाम.....

दिनांक २०. १०. २०२० पृष्ठ संख्या ३ कॉलम १-४

मौसम

24 अक्टूबर तक मौसम परिवर्तनशील, तापमान में और गिरावट की संभावना

## सामान्य से पांच डिग्री गिरा रात का तापमान

जागरण संवाददाता, हिसार : मौसम में लगातार परिवर्तन हो रहा है। सोमवार को रात्रि तापमान में सामान्य से पांच डिग्री सेल्सियस की गिरावट दर्ज की गई है। इतनी गिरावट से रात्रि तापमान 12.7 डिग्री सेल्सियस पर पहुंच गया है। वहीं अधिकतम तापमान 35 डिग्री सेल्सियस पर बना हुआ है।

एचएच के कृषि मौसम विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डा. मदन खीचड़ ने बताया कि राज्य में 24 अक्टूबर तक मौसम आमतौर पर परिवर्तनशील रहने की संभावना है। हवा में बदलाव -पूर्वी से उत्तर परिचमी हवाएं चलने की संभावना को देखते हुए तापमान में हल्की गिरावट संभवित है। इस दौसन अधिकतम तापमान 31 से 34 डिग्री व न्यूनतम तापमान 10 से 13 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने की संभावना है।

### आंकड़े

- 12.7 डिग्री सेल्सियस पर पहुंच रात का तापमान
  - अधिकतम तापमान 35 डिग्री सेल्सियस पर ही स्थिर
- पिछले दिनों में हिसार का तापमान**
- |                        |
|------------------------|
| तारीख- अधिकतम- न्यूनतम |
| 13 अक्टूबर- 36.5- 15.6 |
| 14 अक्टूबर- 36.1- 16.4 |
| 15 अक्टूबर- 35.8- 16.4 |
| 16 अक्टूबर- 34.5- 14.4 |
| 17 अक्टूबर- 35.3- 14.7 |
| 18 अक्टूबर- 35- 14.2   |
| 19 अक्टूबर- 35- 12.7   |

### किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह

**सरसों :** सरसों की बिजाई उन्नत किस्मों आरएच 725, आरएच 749, आरएच 30, आर एच 406 आदि के प्रमाणित बीजों से करें। बिजाई से पहले 2 ग्राम कारबेन्डाजिम प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से अवश्य उपचारित करें।

**गेहूं :** गेहूं की बिजाई के लिए अगेती बिजाई वाली उन्नत किस्मों के बीजों का प्रबंध करे व खाली खेतों को अच्छी प्रकार से तैयार करें, ताकि अक्टूबर के अंतिम सप्ताह में तापमान अनुकूल होने पर अगेती बिजाई शुरू की जा सके। अगेती बिजाई के लिए यदि अच्छा पानी उपलब्ध हो तो डब्ल्यूएच 1105, एच डी 2967, एचडी 3086 व डब्ल्यू एच 711 किस्मों का प्रयोग करें। यदि कम पानी उपलब्ध हो तो अगेती बिजाई के लिए सी

306, डब्ल्यूएच 1080, डब्ल्यूएच 1142 किस्मों के प्रयोग किया जा सकता है।

**देसी चना :** देसी चने की बिजाई के लिए खेत को अच्छी प्रकार से तैयार करें तथा उन्नत किस्मों के साथ बिजाई शुरू करें। देसी चने की उन्नत किस्मों बारानी व सिंचित क्षेत्रों के लिए एचसी 1 तथा सिंचित क्षेत्रों के लिए एचसी 3 (मोटे दाने वाली किस्म) व एचसी 5 किस्मों का प्रयोग करें। बिजाई से पहले बीज का राइजोबियम के टीके से उपचार करें इस उपचार से जड़ों में ग्रन्थियां अच्छी बनती हैं।

**सब्जियां व फल :** मौसम परिवर्तनशील व खुशक रहने की संभावना देखते हुए सब्जियों व फलदार पौधों तथा हरे चारे की फसलों में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....  
भौज का भास्कर  
दिनांक २०। १०। २०२० पृष्ठ संख्या.....। .....कॉलम.....।

### न्यूनतम तापमान सामान्य से पांच डिग्री कम, रातें हुई ठंडी

भास्कर न्यूज | हिसार

मौसम ने करवट लेनी शुरू कर दी है। रात के तापमान में लगातार गिरावट हो रही है। भारतीय मौसम विभाग के अनुसार रात का तापमान सामान्य से 5 डिग्री सेल्सियस नीचे चला गया है। अधिकतम तापमान सामान्य से 1 डिग्री अधिक था। मौसम विभाग ने संभावना जताई है कि अब तापमान में और गिरावट आएगी। सोमवार को दिन का तापमान 35.0 डिग्री दर्ज किया गया। न्यूनतम तापमान 12.7 डिग्री दर्ज किया।

**पूर्वनुमान: 24 तक मौसम परिवर्तनशील रहेगा**

एचएयू के कृषि मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार हरियाणा में 24 अक्टूबर तक मौसम आमतौर पर परिवर्तनशील परंतु खुशक रहने की संभावना है। हवा में बदलाव-पूर्वी से उत्तर-पश्चिमी हवाएं चलने की संभावना को देखते हुए तापमान में हल्की गिरावट की संभावना रहेगी। अधिकतम तापमान 31 से 34 डिग्री व न्यूनतम 10 से 13 डिग्री के आसपास रहने की संभावना है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... *The Tribune*.....  
दिनांक 19. 10. 2020 पृष्ठ संख्या..... 2 ..... कॉलम..... 7-8 .....

### VIRTUAL AGRICULTURE FAIR

Hisar: In the first session of the second day of the virtual agriculture fair of Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University, various webinars were organised. The first webinar gave information about the direct sowing of paddy, in the second webinar, the topics were related to disease and its prevention in milch animals and the third webinar was regarding increasing the yield of rabi crops, etc. Giving information here on Friday, a spokesperson of the university said in this webinar, Dr SS Poonia talked about the direct sowing of paddy, which was proving very effective and that the state government's plan 'Mera Pani Meri Virasat' was also proving worthwhile. He said that this not only saved water, but also reduced the cost of pumping.



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
<b>Top story</b>	<b>19.10.2020</b>	<b>Online</b>	--

Search ...

Search

**Recent Posts**

- » Benefits of Research should reach every farmer with the smallest holdings : Vice Chancellor CCSHAU
- » Punjab Vidhan Sabha pays homage to farmers who died in farm bills protests
- » Haryana Governor appreciates GJU performance
- » NUJ (I) EXPRESSES CONCERN OVER POLICE ACTION AGAINST MEDIA PERSONS IN ODISHA
- » Jammu is fast emerging as North India's Education hub : Union Minister Dr Jitendra Singh

**Categories**

- » Agriculture
- » BLOG

Benefits of Research should reach every farmer with the smallest holdings : Vice Chancellor CCSHAU

**India News Front**

Chandigarh, October 19:

Vice-Chancellor of **Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University, Hisar**, Professor Samar Singh, while addressing the 49th High-Level Meeting of the Research Programme Committee held online at the University as Chairman, said that while scientifically developing new varieties and techniques of crops, fruits, and vegetables, one must also keep in mind that its benefits should reach every farmer with the smallest holdings. Besides this, organic farming should be encouraged so as to curb unsuitable eating habits and diseases which are increasing due to excessive use of chemicals. He said that we have to adopt developed technologies like drone technology, robotics to ensure maximum benefit reaches farmers and ensure that these technologies are farmer-friendly. Citing concern for the depleting groundwater level he said that the water problem is increasing day by day, thus it is very important to adopt water-saving techniques and labor-intensive technology. He also appealed to the farmers to remain in touch with the University so as to get agricultural information regularly.

